राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां

Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

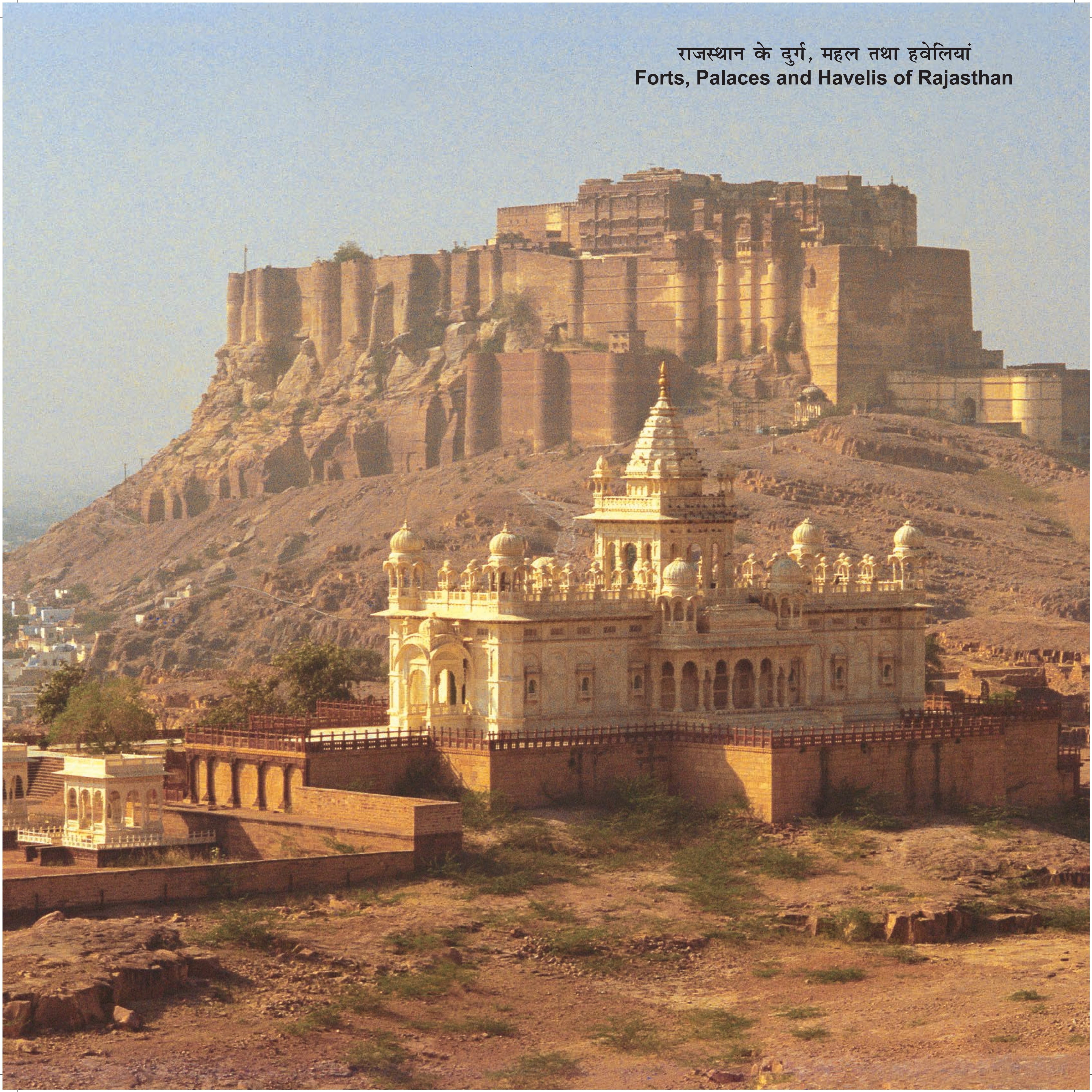

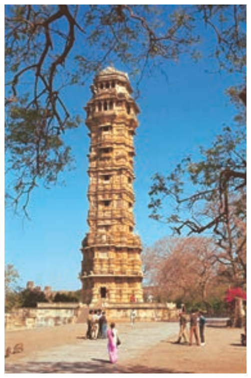

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां

भारत के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित राजस्थान प्रांत की भौगोलिक विभिन्नता वहां की संस्कृति में भी झलकती है। भौगोलिक विशेषताओं ने वहां की संस्कृति को प्रभावित कर अपनी भांति समृद्ध एवं नाना रूपों वाली बनाया है। यहां अरावली पर्वतमाला, वनों से आच्छादित घाटियां, झीलें, वन्य जीव, अभयारण्य तथा रेगिस्तान एवं रेत के टीले मिलते हैं। भारत के उत्तर पूर्व में होने के कारण इसकी सीमाएं पंजाब तथा पाकिस्तान को छूती हैं, वहीं इसका इतिहास प्राचीन काल तक फैला हुआ है। उत्तरी बीकानेर में सिंधुकालीन सभ्यता के अवशेष कालीबंगन में प्राप्त हुए हैं। वैसे देखा जाए तो चारदीवारी में घिरा यह शहर हड़प्पाकालीन है और इन सबसे ऊपर राजस्थान का अर्थ है– राजाओं का स्थान। यों तो राजपूत संस्कृति एवं परंपराओं का केंद्र रहा है।

लगभग सातवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक का राजस्थान का इतिहास राजपूतों के उत्थान एवं पतन का साक्षी रहा है। राजपूत का अर्थ है, राजा का पुत्र। ये अपना उद्‌भव सूर्य एवं चंद्र से मानते हैं और योद्धा जाति क्षत्रिय से संबंध रखते हैं। बीकानेर और जोधपुर के राठौर, उदयपुर के गहलोत एवं सिसोदिया तथा जयपुर के कछवाहा स्वयं को सूर्यवंशी तथा भगवान राम का वंशज मानते हैं, जबकि जैसलमेर के भट्टी अपने को चंद्रवंशी मानते हैं। इनके अलावा यह भी कहा जाता है कि चौहान, सोलंकी, परमार तथा देवरस जाति के लोग आबू पर्वत के पवित्र अग्निकुंड से उत्पन्न हुए थे।

वर्तमान राजस्थान के विगत में अनेक राज्य थे, लेकिन उनमें से मेवाड़ (चित्तौड़गढ़ तथा उदयपुर), आमेर (जयपुर) तथा मारवाड़ (जोधपुर, जैसलमेर और बीकानेर) ये तीन मुख्य थे। इतिहास में समय-समय पर राजपूतों के गढ़ों– जैसे कि चित्तौड, मेवाड़, रणथंभौर, मारवाड़ तथा अन्य स्थानों पर मुस्लिम आक्रमण करते रहे थे। महमूद गजनवी ने ई.प. ग्यारहवीं शताब्दी में तथा मोहम्मद गोरी ने ई.प. बारहवीं शताब्दी के अंत में राजपूताने पर आक्रमण किए थे। उस के पश्चात् कुतुब-उद्-दीन ऐबक ने अजमेर पर अपना आधिपत्य जमा लिया था।

ई.प. चौदहवीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर तथा चित्तौड़ के किलों पर अधिकार जमा लिया था। मुगल बादशाह बाबर तथा सिसोदिया प्रमुख राणा सांगा के बीच ई.प. सोलहवीं शताब्दी में खानवा में घमासान युद्ध हुआ था, जिसकी परिणति राजपूतों की पराजय में हुई थी। इसके कुछ ही समय पश्चात् बाबर के पोते अकबर ने मारवाड़ तथा मेवाड़ पर विजय प्राप्त की तथा कछवाहा वंश की एक राजकुमारी से निकाह कर लिया था, जिसने बाद में आमेर क्षेत्र पर शासन किया।

मेवाड़

गुजरात से गहलोत वंश के लोग जब राजस्थान के दक्षिण-पूर्व हिस्से मेवाड़ में आकर बस गए थे तो वे सिसोदिया कहलाने लगे थे। उनसे संबंधित प्राचीनतम शिलालेख ई.प. 646 का है। मेवाड़ की प्राचीन नगरी चित्तौड़गढ़ में तेरह किलोमीटर परिक्षेत्र में एक भव्य किला है, जिसकी सीमाओं में न केवल अनेक महल हैं, बल्कि झीलें-झरने भी हैं, जो असंख्य लोगों को पानी मुहैया कराते हैं। पन्द्रहवी शताब्दी के मध्य में करीब 35 वर्षों तक चित्तौड़गढ़ पर शासन करने वाले राणा कुंभा ने यहां स्थापत्यकला के श्रेष्ठ, नमूने, जैसे कि दक्षिणी उदयपुर में कुंभलगढ़

FORTS, PALACES AND HAVELIS OF RAJASTHAN

Rajasthan, situated in the western region of India has a diversity of geophysical features which add to the richness and variety of its cultural expressions. It has the Aravalli range of mountains, forested valleys, lakes, wild life sanctuaries and the desert sand-dunes. Pakistan and Punjab and its history dates back to ancient times. Kalibangan, an Indus civilization site in northern Bikaner, was an important walled city of the Harappan period. Above all, Rajasthan (which means the 'Land of Kings') is the cradle of distinctive Rajput culture and traditions.

From the seventh century A.D. to nineteenth century A.D., the history of Rajasthan witnessed the rise and fall of the Rajputs. The word 'Rajput' is derived from the term 'Rajaputra' which means 'sons of kings'. They trace their descent from the lineage of the sun and the moon and belong to *kshatriya*–the warrior caste. The Rathors of Bikaner and Jodhpur, Gahlots and Sisodias of Udaipur and the Kachhawahas of Jaipur are *Suryavanshis*, clans claiming descent from Lord Rama. The Bhattis of Jaisalmer claimed to be *Chandravanshis*, of lunar descent. It is said that the Chauhans, Solankis, Paramaras and the Deoras emerged from the sacred firepit or *Agnikunda* on the summit of the holy Mount Abu.

Although there were a number of states in the present day Rajasthan, the three most prominent were Mewar (Chittorgarh and Udaipur). Amber (Jaipur) and Marwar (Jodhpur, Jaisalmer and Bikaner). Time and again, Rajput strongholds such as Chittor, Mewar, Ranthambor, Marwar and many others were attacked by Muslim armies. Mahmud Ghazni in the eleventh century A.D. and Mohammad Ghori at the end of the twelfth century A.D. attacked the state of Rajputana followed by Qutub-ud-Din Aibak who beseiged Ajmer. Alaud-Din-Khalji in fourteenth century A.D. captured the Fort of Ranthambor and Chittor. In sixteenth century A.D., the battle of Khanwa was fought between the Mughal Emperor, Babur and Sisodia chief, Rana Sanga, which ended in a Rajput defeat. Shortly after, Babur's grandson, Akbar established supremacy over both Marwar and Mewar and married a Rajput princess of the Kachhawaha clan, which ruled over Amber region.

Mewar

The Gahlots, later known as the Sisodias, migrated from Gujarat and occupied Mewar, which lies in the south-east of Rajasthan. Their earliest inscription in Rajputana is dated 646 A.D. Chittorgarh, the ancient capital of Mewar, has a magnificent fort with thirteen kilometres of battlements which encloses not only palaces but also lakes and reservoirs that can support thousands of inhabitants. Kumbha, who ruled Chittorgarh for thirty-five years from mid-fifteenth century A.D. onwards was responsible for several architectural achievements, such as– Fort Kumbhalgarh in

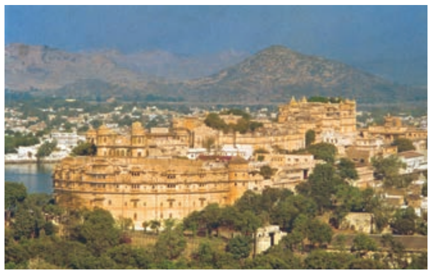

का किला, माऊंट आबू में अचलगढ़ किला, चित्तोड़गढ़ स्थित जय स्तंभ निर्मित करवाए थे तथा साथ ही चित्तोड़गढ़ के किले में भी नवीनीकरण करवाया था।

मेवाड़ की राजधानी उदयपुर में स्थानांतरित किए जाने से पूर्व मुस्लिमों ने तीन बार चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया था। सन् 1303 में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने प्रसिद्ध सुंदरी तथा भीम सिंह की पत्नी रानी पद्‌मिनी से विवाह के उद्देश्य से चित्तौड़गढ़ को घेर लिया था।

गुजरात के बहादुरशाह ने भी सन् 1533 में चित्तौड़गढ़ के विक्रमजीत पर आक्रमण किया था तथा जब विक्रमजीत की सेना हारने लगी थी तो बूंदी की राजकुमारी रानी कर्णवती ने शेष स्त्रियों एवं बच्चों के साथ जौहर किया था। मगर रानी कर्णवती का लड़का कुंवर उदयसिंह किसी प्रकार बच गया था, जो बाद में चित्तौड़गढ़ का उत्तराधिकारी बना। सन् 1567 में मुगल बादशाह अकबर ने चित्तौड़गढ़ को घेर लिया था, लेकिन राजा उदयसिंह किसी प्रकार बच निकला तथा उसने उदयपुर की स्थापना की थी। यों, तो मेवाड़ के शासकों ने हमेशा मुस्लिम आक्रमण ाकारियों से लोहा लिया, मगर सत्रहवीं शताब्दी में आपसी सुलह के कारण हमलों का खतरा काफी कम हो गया था, जिससे इस शांति काल में इस क्षेत्र में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

उदयपुर में अनेक सुंदर भवन हैं, जो वहां के शासकों के सौंदर्य प्रेम को दर्शाते हैं। सिटी पैलेस–अर्थात्, नगर-महल मुगलों की सजावट कला तथा राजपूतों की सैनिक वास्तुकला के मिश्रित रूप का एक सुंदर उदाहरण है। पिछोला झील के किनारे पर बना यह एक विशाल भवन है। इसकी बाहरी दीवारों रेतीले पत्थर की पतली परतों/स्लेटों से बनी हैं तथा उन पर उच्चकोटि का श्वेत रंग किया गया है। आंतरिक भाग में दिवारों को संगमरमर से बनाया गया है तथा उन पर जड़ाऊ कार्य एवं शाही परिवार के जीवन से संबंधित विभिन्न दृश्यों, उत्सवों और समारोहों को चित्रित किया गया है।

इसी प्रकार पिछोला झील के मध्य में जग निवास भी है। इसका निर्माण शाही परिवार के गर्मियों में रहने के लिए किया गया था। वर्तमान में इसे होटल में परिवर्तित कर दिया गया है।

जगमंदिर मंडपों तथा महलों का एक समूह है, जो ऐसा लगता है, मानो झील में तैर रहा हो। मुगल बादशाह शाहजहां ने जब अपने पिता जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह किया था तो उसने इसी जगमंदिर में शरण ली थी।

southern Udaipur, Fort Achalgarh in Mount Abu, the Victory Tower at Chittorgarh, and for the innovations and additions to the Fort at Chittorgarh.

Chittorgarh was invaded three times by the Muslims before the capital of Mewar was shifted to Udaipur. In 1303 A.D. Alaud-Din-Khalji, Sultan of Delhi, laid seige to Chittorgarh in an attempt to marry the famous beauty, Rani Padmini, the wife of Bhim Singh. Bahadur Shah of Gujarat attacked Vikramjeet of Chittorgarh in 1533 A.D. In face of defeat, Rani Karnavati, a Bundi princess led the *Jauhar* in which many women and children sacrificed their lives. However, her own child, Udai Singh was smuggled out, and he lived to inherit the throne of Chittorgarh. In 1567, A.D., the Mughal Emperor, Akbar beseiged Chittorgarh but Udai Singh managed to escape and founded Udaipur, the new capital of Mewar. The rulers of Mewar were known for their resistance to the Muslim invaders. However, compromise with the Mughals in the seventeenth century A.D. reduced the threat of invasion and enabled them to devote more time for cultural pursuits.

The city of Udaipur has several beautiful buildings that speak of the aesthetic taste of its rulers. The City Palace is a blend of Mughal decorative art and Rajput military architecture. It is a massive edifice built on the shores of Lake Pichola. The walls on the outside are built of thin slates of sandstone and covered with the finest possible white plaster work. In the interiors, marble has been used for the walls. They are profusely decorated with glasswork, inlay work, paintings depicting celebration of festivals, processions and scenes showing the life in the royal household.

Jag Niwas or the Lake Palace of Udaipur is a small island of cool marble set amidst Lake Pichola. It was a summer resort for the members of the royal household which has now been transformed into a Hotel.

Jag Mandir is cluster of pavilions and palaces which seems to be floating on the surface of the lake. It was in Jag Mandir that Emperor Shahjahan sought refuge when he rebelled against his father, Jahangir.

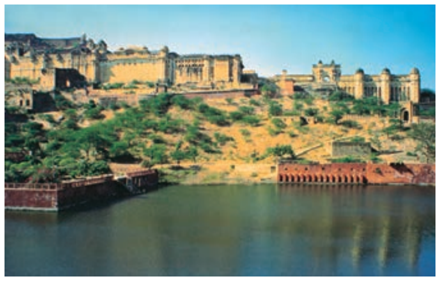

आमेर

बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दी में कछवाहा राजपूत आमेर में रहने लगे थे। जयसिंह द्वितीय ग्यारह वर्ष की आयु में आमेर का उत्तराधिकारी बना था। सन् 1727 में उसने अपनी राजधानी को आमेर से स्थानांतरित कर जयपुर में स्थापित की थी, जो कि गुलाबी शहर के नाम से प्रसिद्ध है। जयपुर स्थित किले, महल परिसर, वेधशाला तथा अन्य भवनों को बनाने में जयपुर के समीप मिलने वाले भूरे पत्थर तथा पलस्तर का इस्तेमाल किया गया था। तत्पश्चात् शहर को गुलाबी आभा प्रदान करने के लिए गहरे गुलाबी रंग से रंगा गया।

जयसिंह द्वितीय एक खगोल शास्त्री तथा गणितज्ञ था। उसने तत्कालीन वास्तुकला की शैली सौंदर्यशास्त्र के नियमों को ध्यान में रख कर जयपुर की योजना की थी। जयपुर के चारों तरफ एक मजबूत सीमा-दीवार है तथा राजमहल परिसर में वेधशाला–जंतर-मंतर है। यह राजा जयसिंह द्वारा निर्मित पांच वेधशालाओं में से एक है। अन्य वेधशालाएं दिल्ली, मथुरा, उज्जैन तथा वाराणसी में हैं। महल की दीवारों के समीप ही पिरामिड के आकार के अग्रभाग वाला पांच मंजिला हवा महल है। इसके झरोखों से आती हवा इसे शीतल रखती है। इसके छोटे-छोटे कक्षों में खिड़कियां हैं। शाही परिवार की महिलाएं इनसे बाहर की गतिविधियां देखा करती थीं, मगर बाहर के लोग उन्हें नहीं देख पाते थे।

मारवाड़

राजस्थान के पश्चिमी भाग में थार का प्रसिद्ध रेगिस्तान है। इसे मारवाड़ कहते हैं। इस क्षेत्र में तीन प्रमुख नगर हैं। जोधपुर तथा बीकानेर में राठौर वंश की प्रधानता है तथा जैसलमेर में भाटियों की। इन तीनों नगरों की भौगोलिक स्थिति ने यहां की वास्तुकला की शैलियों को प्रभावित किया है। भवनों को हवादार बनाने के लिए दीवारों में जालियों का उपयोग बहुतायत से किया गया है। इस क्षेत्र की वास्तुकला की एक अन्य विशेषता उभरे हुए छज्जे भी हैं, जो अर्द्धवृत्ताकार होते हुए बालकॅनी को ओढ़ते हैं। भवनों के निर्माण में इस क्षेत्र में रेतीले पत्थर का बहुतायत से इस्तेमाल हुआ है, क्योंकि ऐसे पत्थर पर उत्कीर्णन कार्य सहजता से किया जा सकता है।

जोधपुर के संस्थापक राव जोधा ने मेहरानगढ़ का किला बनवाया था। यह किला इतना ऊँचा है कि इससे शहर की सीमा को देखा जा सकता है। इसी किले में मोती महल तथा फूल महल जैसे प्रचुर रूप से अलंकृत अनेक महल हैं। इन महलों की दीवारें तथा खिड़कियां महीन रूप से उत्कीर्ण हैं।

राव जोधा के छठे पुत्र बीका ने सन् 1485 में बीकानेर बसाया था। इसका एक महत्वपूर्ण आकर्षण जूनागढ़ का किला है, जिसे मुगल बादशाह अकबर के एक सेनापति रायसिंह ने निर्मित करवाया था। इसके चारों तरफ खाई है तथा इस किले में कई महल हैं, जो कि हस्त तक्षित प्रतिमाओं, स्तंभों तथा महीन जालीदार कार्यों से सुशोभित हैं।

Amber

The Kachhawahas established themselves in Amber around the twelfth and thirteenth century A.D. Jai Singh II succeeded his father as ruler of Amber at the age of eleven. He shifted the capital from Amber to the plains, where he built a new city, Jaipur, in 1727 A.D., which is popularly known as the 'Pink City'. The principal building material used for the fortress, palace complex, observatory and other buildings is rubble and plaster along with the local grey stone found near Jaipur. A rusty pink paint rather than cream has been used over the plaster which gives a pink hue to the buildings.

Jai Singh II, an astronomer and a mathematician, planned the city of Jaipur keeping in mind the aesthetic norms and conforming to the architectural style of the period. A strong wall encircles the city in the heart of which is the City Palace. Within the palace complex there is an observatory–the Jantar Mantar. It is one of the five observatories built by Jai Singh II. The others are in Delhi, Varanasi, Mathura and Ujjain. Adjacent to the palace walls is the Hawa Mahal, a pyramidal facade of five storeys. It allows free movement of air which keeps the building cool. It is made up of small compartments, each with a window through which the women of the royal household could watch processions in the public street seated in the airy *jharokhas* without being seen themselves.

Marwar

On the western border of Rajasthan lies the formidable expanse of the Thar desert formerly known as Marwar. This region has three important cities, Jodhpur and Bikaner dominated by the Rathor clan and Jaisalmer by the Bhattis. The location of these cities has influenced their architectural styles. *Jali* screens have been extensively used as panels in large areas of the walls to make the building airy. Another prominent feature of architecture in this region is the protruding *chajjas* carved almost to a semicircle to cover projecting balconies. Sandstone is the basic building material used for construction in this region. It is easy to work on, making it conducive for decorative carving.

Rao Jodha, the founder of Jodhpur, built the Mehrangarh Fort which is so high that one can see the boundaries of the city. It houses some of the most intricately adorned palaces–the Moti Mahal and the Phool Mahal–with exquisitely carved panels and latticed windows.

Rao Jodha's sixth son, Bika, found the city of Bikaner in 1485 A.D. Its outstanding attraction is the Junagarh Fort, build by Rai Singh, a general at the Court of Akbar, the Mughal Emperor. It is encircled by a moat and contains palaces that are beautifully embellished by hand carved friezes, pillars and delicate *Jali* screens.

मारवाड़ के तीनों नगरों में सबसे प्राचीन जैसलमेर शहर को बारहवीं शताब्दी में भट्टी वंश के रावल जैसल ने स्थापित किया था। यह शहर अफ्रीका एवं पश्चिमी एशिया से भारत में दिल्ली तथा आगरा तक आने वाले व्यापारिक मार्ग पर स्थित है। जब व्यापारी समृद्ध हुए तो उन्होंने यहां पर हवेलियां बना लीं। हवेली में प्राय: चार-पांच परिवार रहते हैं। हवेली में सबसे निचले भाग का उपयोग व्यापारियों से मेल मुलाकात करने के लिए किया जाता था तथा ऊपरी मंजिलों पर परिवार रहते थे। इस प्रकार की कई हवेलियों को मिला कर एक मोहल्ला बनता था, जिसमें प्राय: एक ही संप्रदाय एवं व्यवसाय के लोग रहते थे। इसके श्रेष्ठतम उदाहरण पटवों की हवेली, सलीम सिंह की हवेली तथा नाथूमल की हवेली हैं।

जैसलमेर के किले में 99 बुर्ज हैं। किले की विशाल दीवारों को केवल पत्थर के टुकड़ों से बनाया गया है, जिसमें सीमेंट आदि का उपयोग नहीं किया गया है।

भरतपुर एवं डीग

भरतपुर राजपूताना साम्राज्य न होकर जाट प्रधान था। सन् 1722 में आमेर के राजा जयसिंह द्वितीय ने जाट विद्रोह चुरमुन दबाने के पुरस्कार स्वरूप जाट बदन सिंह को डीग का राजा घोषित किया था। डीग तथा भरतपुर के दोनों किलों का निर्माण बदन सिंह ने करवाया था तथा बदनसिंह के पुत्र सूरजमल ने डीग में महलों का निर्माण करवाया था। ये महल बड़े मुगल-उद्यानों के बीच पीले रेतीले पत्थर तथा सफेद संगमरमर से बनाए गए थे। कुछ विद्वान इन महलों की सुंदरता तथा एकरूपता को देखते हुए, इनकी तुलना प्रसिद्ध ताजमहल से करते हैं।

अठारहवीं शताब्दी अनेक राजपूत साम्राज्यों के पतन की साक्षी है। यद्यपि इस काल में भवन निर्माण होता रहा, मगर उसमें कोई शैलीगत विकास दृष्टिगोचर नहीं हुआ। उत्तराधिकार के मसले के झगड़ों के कारण ये साम्राज्य कमजोर बने तथा इसी कारण मराठों और मुस्लिमों के आक्रमण के केंद्र भी। इसी बीच अंग्रेज भी भारत में अपने प्रभुत्व को बढ़ा रहे थे। सन् 1817 से 1823 के मध्य अनेक राजपूत राज्यों, जैसे कि जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, बीकानेर, बूंदी, कोटा, सिरोही तथा किशनगढ़ ने अंग्रेजों के साथ संधियां की। सन् 1947 में जब भारत अंग्रेजों के प्रभुत्व से स्वतंत्र हुआ तो सभी राज्य भारतीय महासंघ में शामिल हो गए।

Jaisalmer, one of the oldest of the three cities of Marwar, was founded by Rawal Jaisal of the Bhatti dynasty in the twelfth century A.D. It is situated directly on the ancient caravan routes that came from Africa and West Asia to Delhi and Agra. The merchants prospered on trade and built a number of *havelis*. ‘Haveli’ is a courtyard building in which four or five families live together. Sometimes the ground floor was used for meetings with traders or for commercial purposes and the upper floors as residence for the families. Several *havelis* formed a *mohalla*, all of whose residents were of the same caste and followed a similar occupation. The classical example of *havelis* are the Patwaon ki Haveli, Salim Singh ki Haveli and Nathumal’s Haveli.

Jaisalmer’s Fort has ninety-nine bastions. The massive walls of the fort have been built stone block without using any cementing material.

Bharatpur and Deeg

Bharatpur was not a Rajput kingdom, but one dominated by the Jats. In 1772 A.D. a Jat called Badan Singh was crowned king of Deeg by Jai Singh II of Amber as a reward for suppressing the Jat rebel, Churamun. The Forts at both Deeg and Bharatpur were built by Badan Singh, and it was Suraj Mal, Badan Singh’s son, who built the palaces at Deeg. The palaces are built of pale cream sandstone and white marble and are set in large formal Mughal gardens. They are ranked by some scholars as next to Taj Mahal in beauty and symmetry.

The eighteenth century A.D. saw the decline of various Rajput kingdoms. Though building continued but there was little stylistic development. Quarrels over succession made these States vulnerable to attack by the Marathas and Muslims. Meanwhile, the British were expanding their dominion in India. Between 1817 and 1823 A.D. several Rajput states, Jaipur, Udaipur, Jaisalmer, Bikaner, Bundi, Kota, Sirohi and Kishangarh signed treaties with the British. In 1947 A.D. when India became independent from British rule, the rulers of the Princely States joined the Indian Union.

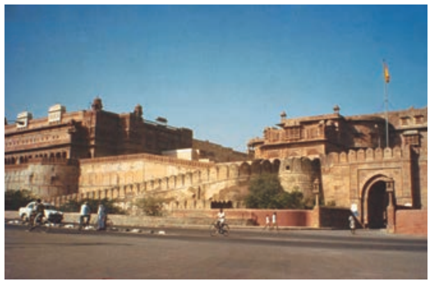

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

Creative activities for school students and teachers

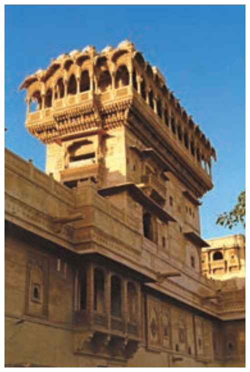

इस पैकेज में दिए गए 24 रंगीन चित्रों को आप कक्षा या स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन चित्रों को आप गत्ते पर लगा कर इनका शीर्षक तथा चित्र के पीछे दिया गया मुख्य विवरण नीचे स्थानीय भाषा में भी लिख सकते हैं। भारतीय कला के शैक्षणिक महत्व को उजागर करने के लिए आप इन चित्रों की गहराई में जाकर उन विषयों के साथ अध्ययन कर सकते हैं, जो इनसे संबंधित हों। अध्यापकगण भी नीचे सुझाई गई गतिविधियों में छात्रों को सम्मिलित कर चित्रों पर कार्य कर सकते हैं। इससे छात्रों की ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी होगा।

बाहरी रेखाओं वाले भारत के बड़े आकार के मानचित्र को लें तथा उसमें देश के विभिन्न दुर्गों, महलों तथा हवेलियों के स्थानों को अंकित करें।

देश के दुर्गों तथा महलों का अध्ययन कर उनका निर्माण करवाने वाले राजाओं के बारे में जानकारी एकत्रित करें। इन स्मारकों के निर्माण काल तथा उद्देश्य का भी पता लगाएं। इन्हीं से संबंधित निम्नलिखित विषयों के बारे में भी जानकारी एकत्रित करें।

– भवन के क्षेत्र विशेष की जलवायु।

– प्रकृति, नदी, पेड़-पौधे तथा पक्षी

– इन किलों को बनाने वाले तथा उनमें रहने वाले लोग तथा उनका व्यवसाय आदि।

– उस काल का संगीत, नृत्य, नाटक, शिल्प कला आदि।

– क्षेत्र विशेष के देवी-देवता, पौराणिक कथाएं, त्यौहार रीति-रिवाज।

पैकेज में दिए गए स्मारकों के चित्रों को देख कर इनके रेखा-चित्र बनाएं।

मध्यकाल के यात्रियों/इतिहासकारों/कलाकारों ने इन पैकेजों में दर्ज़ भवनों एवं स्मारकों को देखा तथा वे लोग इनसे संबंधित वृत्तांतों तथा संस्मरणों को लिख कर छोड़ गए हैं। इन वृत्तातों एवं संस्मरणों को एकत्रित कर उनमें वर्णित इन स्थानों का शैलीगत वर्णन तथा स्थानों के नाम के उच्चारण को समझिए।

विभिन्न दुर्गों की धरातलीय योजना का अध्ययन कर उनकी स्थापत्य कला में समानताएं खोजिए। अपने घर, स्कूल या कॉलेज का चित्र तैयार बना कर उसमें खिड़कियों तथा दरवाजों की वास्तुकला के विवरण को भी दर्शाएं।

धार्मिक स्वरूप को समझना

सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि लोग बेहतर एवं संपूर्ण जीवन जिएँ। इन सभी धर्मों का बाह्य रूप, जैसे कि अनुष्ठान तथा प्रथाएँ, प्राय: ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक और यहां तक कि भौगोलिक कारणों से एक-दूसरे से भिन्नता रखता है। कई धार्मिक रीति-रिवाज एवं समारोह वार्षिक कृषि से जुड़े होते हैं तथा वे जीवन के आनंद को व्यक्त करते हैं। प्राय: हर काल के धार्मिक विश्वासों ने अपने युग के वास्तुकारों, मूर्तिकारों एवं चित्रकारों को प्रभावित किया है। इसी कारण कारीगरों ने उस धर्म से संबंधित विशेष प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए सुंदर स्मारकों की रचना की है।

अध्यापकगण अपने छात्रों को भारत के लोगों एवं उनके विभिन्न धर्मों का अध्ययन करने को कहें। साथ ही उनसे हिंदू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, जैन तथा सिख आदि हर धर्म के बारे में जानकारी जुटाने के लिए भी कहें।

The 24 pictures provided in this package can be displayed in the classroom or any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard with the title and description in regional languages. It can also be studied indepth with activities that bring out the educational value of Indian art. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring 'students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below :

In a large outline map of India, mark the sites of various forts, palaces and havelis of our country. Find out the location of the forts and palaces and havelis given in this package.

Make a study of the forts and palaces in India and collect information of the kings, emperors who built these forts and palaces. Find out the dates of these monuments and the purpose for which they were used. Collect the following information :

— Climate of the location of the building.

— Natural surroundings, rivers, mountain range and the flora and fauna.

— People, who built and lived in these forts, their occupation, etc.

— Music, dance, drama, craft, etc. of the period.

— Customs, festivals celebrated in the region and the myths associated.

Make a sketch/rough outline of the monuments from the pictures provided in the cultural package.

The forts, palaces and havelis mentioned in this package were visited by a number of travellers/historians/artists in the medieval period of Indian history and these people have left a vivid and interesting account of these monuments including the drawings/sketches. Collect such travelogues/memoirs/sketches. Notice interesting details in these travelogues such as the style of description, pronunciation of places and the surrounding areas of monuments of that period.

Collect and study the various ground plans of different forts and find out the similarities. Similar studies of ground plans can also be made of your school, home or college showing windows, doors and other architectural details.

Understanding Religious Concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geo-physical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with the annual agricultural cycle and celebrations of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors and painters of the by-gone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

वास्तुकला पर उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के दुर्गों का उल्लेख मिलता है। दुर्ग अथवा किला सभी दिशाओं से सुदृढ़ एवं आरक्षित भवन को कहते हैं, जिसके दायरे में कभी-कभी सम्पूर्ण शहर बसा होता है। इन ग्रंथों में पर्वतीय, भू, जल अथवा द्वीपीय दुर्गों के साथ वन्य एवं मरु दुर्गों आदि का उल्लेख आता है।

अपने अंचल के विभिन्न दुर्गों का अपने छात्रों हेतु एक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया जा सकता है अथवा उन्हें क्षेत्र विशेष की वास्तुकला के इतिहास तथा विभिन्न प्रकार के दुर्गों के अध्ययन हेतु कहें।

देश के विभिन्न दुर्गों तथा महलों के ऐतिहासिक विकास पर कार्य-योजना बनाएं।

दुर्गों तथा महलों की स्थापत्य कला से संबंधित तकनीकी शब्दों की पुस्तिका बनाएँ तथा उसमें उनका अर्थ भी लिखें, जैसेकि बुर्ज, परकोटा, उत्थापन, मुंडेर आदि।

देश के विभिन्न दुर्गों एवं महलों के नामकरण के बारे में जानकारी एकत्रित कर उसके विषय में कहानी लिखें।

कल्पना करें कि आप मध्यकाल के दौरान किले में रहते थे। ऐसी स्थिति में जन-साधारण, शासक तथा वास्तुकार के रूप में अपने जीवन के बारे में लिखें।

किसी दुर्ग या महल निर्माण से संबंधित घटना को उस समय विशेष के संगीत के माध्यम से नाटकीय रूप प्रदान करें।

विभिन्न दुर्गों, महलों तथा हवेलियों को दर्शाने वाली एक पुस्तिका तैयार करें, जिसमें उनसे संबंधित सभी महत्वपूर्ण वर्णन हो। इस कार्य के लिए आप पैकेज में दिए गए चित्रों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्राचीन पुस्तकों में से दुर्गों एवं महलों के बारे में संदर्भ-सामग्री तथा सूक्तियों का संग्रह करें।

विभिन्न क्षेत्रों की स्थापत्य कला से संबंधित अनुष्ठानों के संदर्भ तथा चित्र संग्रहीत करें।

देश में सुंदर दुर्ग, महल तथा हवेलियां बनवाने वाले राजाओं एवं वंशों के बारे में कहानियां लिखें।

अपने देश के विभिन्न किलों का अध्ययन कर उन्हें नीचे दी जा रही श्रेणियों के अनुसार सूचीबद्ध करें :

- अकृत्रिम दुर्ग
- द्वीपीय दुर्ग
- मरु दुर्ग
- पर्वतीय दुर्ग
- सपाट भूमि वाले दुर्ग।

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.

Ancient texts on architecture describe a variety of forts. *Durg* or fort is a fortified building which many times encompasses whole cities within its walls. In these texts, there is mention of land, hill, water or island and also forest and desert forts.

Students can be taken on educational tours to nearby forts or asked to study the history of architecture of a specific region.

Conduct a Project on the historical development of forts and palaces in our country.

Make a booklet of the terms associated with the architecture of forts and palaces with their meaning. Some terms like turret design, elevation, battlement, rampart, parapet, etc. can be included.

Find out all that you can know about the names of different forts and palaces of our country and write a story how these were named.

Imagine you lived in the fort in the medieval times and describe your life as an architect, emperor, common man.

Dramatise the events involved in the construction of the fort or a palace and enrich with music of the period.

Make a scrap book displaying different forts, palaces and havelis with important descriptions. You may choose pictures from this package also.

Collect references/quotations from ancient books on forts and palaces.

Collect pictures and references of the rituals connected with the architecture in different regions.

Write stories of important dynasties, emperors who built beautiful forts, palaces and havelis in our country.

Conduct a study of various forts in our country and categorize these monuments as per the following :

- Natural Fort
- Island Fort
- Desert Fort
- Mountain Fort
- Land Fort

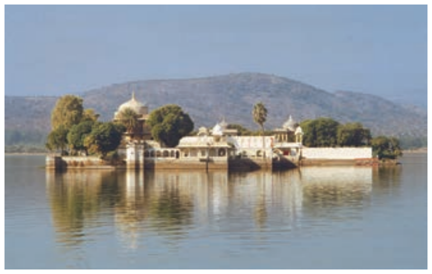

CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

15-A, Sector-7, Dwarka, New Delhi - 110 075

Phone : 47151000 (100 Lines) Fax : 91-11-25088637

email : dg.ccrt@nic.in, website : www.ccrtindia.gov.in

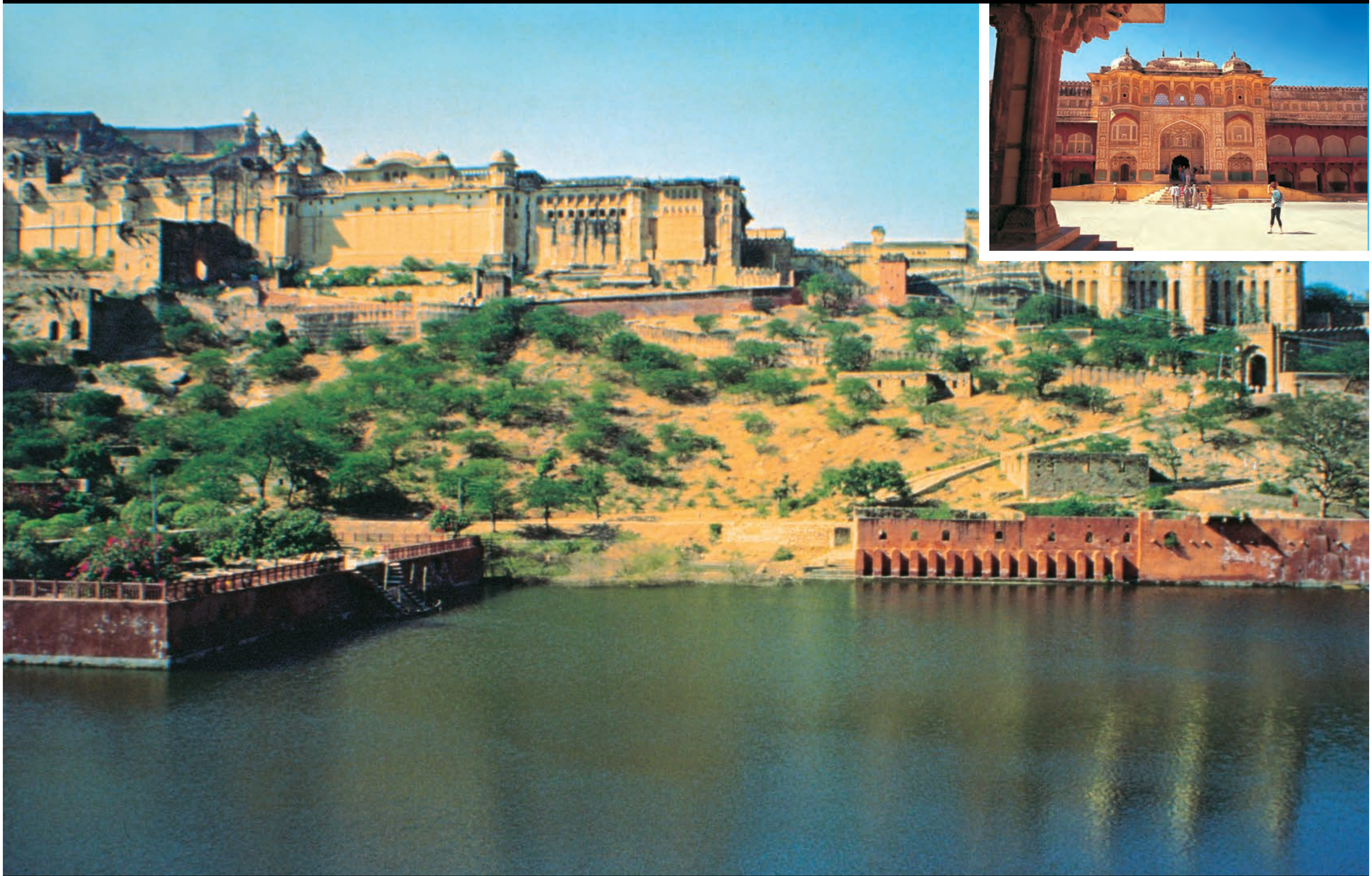

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

1. आमेर का किला, जयपुर, राजस्थान

अरावली पर्वतमाला में जयपुर से 11 कि. मी. दूर कछवाहा राजपूतों की प्राचीन राजधानी आमेर स्थित है। बादशाह अकबर के राजपूत सेनापति राजा मान सिंह के समय में इस किलेनुमा महल का निर्माण हुआ था। इसे एक खड़ी चट्टान पर आयताकार रूप में निर्मित किया गया था। समीप की छोटी झील में इसका तथा इसकी मीनारों का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। इसके लंबे गेरूए सुनहरे परकोटे को सर्पाकार रूप में चट्टान के ऊपर तथा उस काल की स्थापत्य कला के विवरण के साथ देखा जा सकता है।

इसमें दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, अनेक महल, मंडप तथा जगत शिरोमणि एवं शिला देवी जैसे प्रख्यात मंदिर भी है।

इस किले का गणेश पोल नामक प्रवेश द्वार (आंतरिक चित्र में दर्शित) जयसिंह प्रथम द्वारा बनवाया गया था तथा यह दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास के बीच स्थित है। इसके द्वारा आम जनता किले के निजी कक्षों में प्रवेश करती है। प्रवेश द्वार की ऊपरी दीर्घा में जाली युक्त खिड़कियां बनाई गई थीं, ताकि शाही परिवार की स्त्रियां उनमें से बाहर के क्रिया-कलाप देखें, किन्तु बाहर से उन्हें कोई न देख पाए।

1. Amber Fort, Jaipur, Rajasthan

Amber, the ancient capital of the Kachhawaha Rajputs lies in the rocky Aravalli hills, 11 kms north of Jaipur. Much of what remains of the fortress-palace today was constructed during the reign of Raja Man Singh, the Rajput commmander of Akbar's army. It is built on a steep cliff; rectangular in concept, its towers and white walls are reflected in a small lake. It's long russet gold ramparts adhere to the architectural style of the period.

This fort comprises the Diwan-i-Am, Diwan-i-Khas, several palaces, courtyards and the famous Jagat Shiromani and Shila Devi temples.

The entrance gate of the Amber Palace known as Ganesh Pol (inset) was added by Jai Singh I. Ganesh Pol is situated between the Diwan-i-Am (Public Court) and the Diwan-i-Khas (Private Court). This gate serves as the entrance for the public to the private courts of the palace. The gallery above the Ganesh Pol with lattice work windows was constructed so as to allow the women in the family to watch the activities in the street without being seen from outside.

2. शीश महल, आमेर का किला, जयपुर, राजस्थान

आमेर के किले का पूर्वी मण्डप दो मंजिला है तथा इसकी एक मंजिल जय मंदिर के नीचे है तथा दूसरी जस मंदिर के ऊपर। जय मंदिर में ही शीश महल – अर्थात्, शीशों का महल तथा दीवान-ए-खास स्थित है।

यह चित्र शीश महल का है तथा इसकी दीवारों तथा छत पर छोटे-छोटे अवतल शीशों को विशिष्ट रूप में जड़ा देखा जा सकता है। संध्या के धुंधलके में जब वहां चिराग जलाए जाते थे, तो सारा शीश महल ऐसे चमक उठता था, जैसे जगमगाते सितारों से चमकता आसमान हो।

भवनों को सौन्दर्य प्रदान करने के लिए शीशे की पच्चीकारी आम राजपूत शैली है, लेकिन इस भवन में शाहजहाँ के समय के सौन्दर्यकला के नमूने जैसे– मेहराबनुमा स्थापत्यकला का भी प्रयोग किया गया है।

2. Sheesh Mahal, Amber Fort, Jaipur, Rajasthan

The eastern pavilion of the Amber palace is built in two storeys, one below the Jai mandir and the other above the Jas mandir. The Jai mandir has the Diwan-i-Khas and the Sheesh Mahal, ‘The Hall of Mirrors’.

The picture shows the interior of the Sheesh Mahal. The plaster of the wall and ceiling is embedded with tiny concave mirrors forming a variety of designs. When this palace was occupied, lamps were lit after dark, the reflected light in the mirrors of the Sheesh Mahal created an illusion of a multitude of stars in the sky.

Glass mosaic is a common Rajput technique used as decoration in buildings. The particular patterns used here, especially the web of tiny arch-shaped indents, follow the Shahjahani adaptation of this decorative art.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

3. सिटी पैलेस, चंद्रमहल, जयपुर, राजस्थान

राजस्थान का प्रसिद्ध गुलाबी शहर जयपुर आगरा से 241 किलोमीटर दूर है तथा इसे आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह ने बसाया था। नगर के मध्य में स्थित यह महल सीमा दीवार से घिरा है। इस महल का सर्वाधिक प्राचीन भवन तथा मध्य परिसर चंद्रमहल है, जिसका निर्माण सन् 1724-34 में किया गया था। इसी के धरातल स्तर पर उत्तर की तरफ प्रीतम निवास नामक एक चौड़ा बरामदा है तथा यहीं से संगमरमर की बनी एक नहर बगीचे तक जाती है। चंद्र महल के धरातलीय स्तर का अधिकांश भाग आम लोगों के कक्ष ने घेरा हुआ है। एक प्रकार से यह कक्ष छोटा सा या निम्न परिस्तंभ वाला कक्ष है, जिसकी मेहराब नुकीली है। चंद्रमहल के दक्षिण-पूर्व में दीवान-ए-आम है। वर्तमान में इसे आर्ट गैलरी के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। शाही *जनाना*, चंद्र महल के पश्चिम में स्थित एक विशाल भवन है। बादल महल तथा गोविंद देव मंदिर भवन के दो मुख्य मंडप हैं। चंद्र महल के समीप ही प्रसिद्ध वेधशाला जंतर-मंतर (आंतरिक चित्र) भी है। यह जयसिंह द्वितीय द्वारा 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में बनवाई गई पांचों वेधशालाओं में सबसे बड़ी है। अन्य वेधशालाएं दिल्ली, मथुरा, उज्जैन तथा वाराणसी में है।

3. City Palace, Chandra Mahal, Jaipur, Rajasthan

Jaipur, the Pink city of Rajasthan which is 241 kms. from Agra was founded by Maharaja Sawai Jai Singh of Amber. The City Palace situated in the centre of the city is surrounded by a boundary wall. the earliest building and the centre of the complex is the Chandra Mahal which was constructed in 1724-34 A.D. The picture shows a seven-tiered, pyramidal structure of the Chandra Mahal. On the ground floor, on the north side, is the broad verandah called the Pritam Niwas, from which a marble channel runs into the formal garden.In the main portion of the ground floor of the Chandra Mahal is situated the “Hall of audience”. This is a small and rather low peristyle hall with the familiar cusped arches. To the south-east of the Chandra Mahal is the building known as Diwan-i-Am (at present this is serving as an art gallery). The royal women apartments (*zenana*) lies in the west of Chandra Mahal, which is a vast building. The two principal pavilions of the palace are the Badal Mahal and the Govind Deo temple. Close to the Chandra Mahal is the famous Jantar Mantar constructed in 1718-34 A.D., (inset picture) the largest of the five observatories built by Jai Singh II in the early eighteenth century A.D., the others are at Delhi, Mathura, Ujjain and Varanasi.

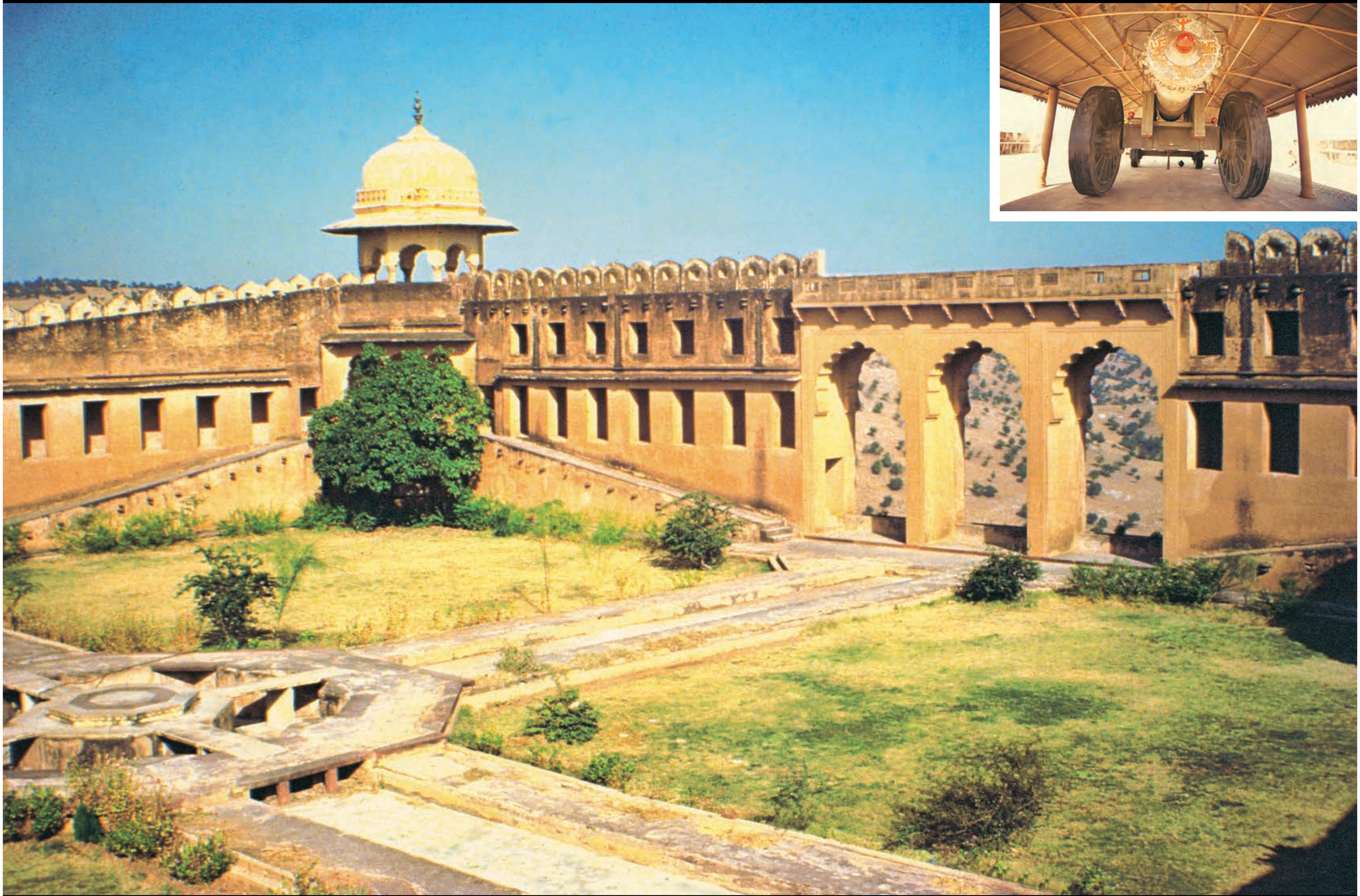

4. जयगढ़ का किला, जयपुर राजस्थान

जयगढ़ के किले का निर्माण जयसिंह ने सन् 1600 में करवाया था। किले के नीचे के मैदानी इलाके तथा जयपुर का सुंदर दृश्य देखा जा सकता है। यह किला वास्तव में कछवाहा शासकों के प्रसिद्ध खजाने को सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया था। इसी कारण इस किले की योजना इस प्रकार बनाई गई थी कि यह सुरक्षित रहे तथा दुश्मन अंदर न आ सके। आंतरिक चित्र में पहियों वाली विश्व की विशालतम तोपों में से एक तोप 'जयवान' जो जयगढ़ किले के हथियार कारखाने में बनाई गई थी, का दृश्य देखा जा सकता है।

4. Jaigarh Fort, Jaipur, Rajasthan

The imposing Jaigarh Fort was built in 1600 A.D. by Raja Man Singh. It offers a beautiful view of the plans and the city of Jaipur. This fort housed the famous treasures of the Kachhawaha rulers in deep vaults. The fort was designed in a manner that no enemy could enter as it was well protected from all sides. In the (inset) picture you can see Jaiwaan, one of the largest cannon on wheels in the world, made in the foundry of Jaigarh.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

5. जल महल, जयपुर, राजस्थान

जयपुर की नगर दीवार से बाहर अनेक महलों के भवन है। दक्षिण पूर्व में आगरा-मार्ग पर सिसोदिया रानी महल है। इस महल का निर्माण सवाई जयसिंह की पत्नी के लिए करवाया गया था (चित्र में दृष्टिगोचर नहीं है)। इसी प्रकार उत्तर-पूर्व में आमेर तक अनेक भवनों की कतार भी है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण जल महल है, जिसका निर्माण मनोरंजन के लिए एक कृत्रिम झील मान सागर के बीच किया गया था।

5. Jal Mahal, Jaipur, Rajasthan

Outside the Jaipur city walls are various other palace buildings. To the south-east on the Agra road is the Sisodia Rani Mahal, built for the wife of Sawai Jai Singh (not seen in the picture). To the north-east, numerous buildings line the road to Amber, of which the most important is the Jal Mahal, a pleasure palace built in the middle of Man Sagar, the artificial lake.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

6. हवा महल, जयपुर, राजस्थान

हवा महल, जयपुर शहर की एक मुख्य पहचान है तथा महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने सन् 1799 में इसका निर्माण करवाया था। यह पांच मंजिला भवन राजपूत वास्तुकला का अनूठा उदाहरण है। इसकी अर्द्ध अष्टकोणीय गुलाबी रेतीले पत्थर से बनी खिड़कियां देखते ही बनती हैं, जो कि मधुमक्खी के छत्ते के डिज़ाइन का आभास देती हैं। इसकी पहली दो मंजिलें अपने में तलघर तथा प्रांगण को समेटे हैं तथा शेष तीनों मंजिलों में केवल गलियारे और छज्जे हैं। हवा महल का बाह्य रूप किसी मंदिर के शिखर का आभास देता है। वास्तव में हवा महल का निर्माण इसलिए किया गया था कि शाही परिवार की स्त्रियां इसके 953 आलों तथा खिड़कियों में से राह चलती शोभायात्राओं को देख सकें, किन्तु बाहर से उन्हें कोई न देख सके। आंतरिक चित्र में हवा महल का पृष्ठ भाग देखा जा सकता है।

6. Hawa Mahal, Jaipur, Rajasthan

Hawa Mahal or Palace of the Winds is one of Jaipur's major landmarks. It was built in 1799 A.D. by Maharaja Sawai Pratap Singh. This five storey building is a unique example of Rajput architecture with its pink coloured semi octagonal and delicate honeycombed sandstone windows. The first two storeys of the Hawa Mahal enclose basement and courtyards, but the three storeys above consist only of passages and balconies. The exterior of the Hawa Mahal gives the look of a *Shikhara* of a temple. It was originally built to enable the royal ladies, seated in its 953 niches and windows to look down on processions in the main street below without being seen by the common people. In the inset picture you can see the back view of the Hawa Mahal.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

7. मेहरानगढ़ का किला, जोधपुर, राजस्थान

जोधपुर की स्थापना राव जोधा ने सन् 1459 में की थी। यह 235 मी. ऊंचे रेतीले पत्थर की चट्टानों पर स्थित है तथा जयपुर से इसकी दूरी 386 किलोमीटर है। यह किला मेहरानगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है, जो कि मैदानी क्षेत्र से 122 मीटर ऊपर स्थित है। यह एक ऊंची दीवार से घिरा है तथा इसके अनेक परकोटे हैं। इसकी पूर्वी मीनार तथा परकोटे काफी सुदृढ़ दिखाई देते हैं। वैसे तो इसके सात दरवाजे हैं, मगर चौथा दरवाजा नष्ट हो चुका है। दो बुर्जों के मध्य में स्थित प्रथम दरवाजा फतेहपुर पोल पर मुड़ा गढ़गज है। गोपाल गेट, भौरों गेट, दोधकांगड़ा गेट भव्य मेहराबों से अलंकृत है। इसके छठें प्रवेश द्वार लोह पोल पर सती हुई पंद्रह रानियों के हाथों की छाप देखी जा सकती है। इसी लोह पोल से रास्ता अंतिम बार मुड़कर उत्तरी कोने का चक्कर लगाता किले में चला जाता है। सातवें प्रवेश द्वार सूरज पोल के पूर्वी रास्ते की अगल बगल से दो रास्ते दरबार में जाते हैं। इन प्रवेश द्वारों के अतिरिक्त किले में मोती महल, शाही स्त्रियों का निवास-स्थान फूल महल, सलीम कोट, मुरली मनोहर जी मंदिर, कालका मंदिर, चामुंडा मंदिर, चामुंडा की नदी तथा रानी तालाब और गुलाब सागर नामक दो छोटे तालाब दक्षिण में स्थित है। किले की चोटी तीन क्षेत्रों में विभक्त है - उत्तर पश्चिम का महल, चट्टान के दक्षिण किनारे वाला अत्यंत किलेबंद क्षेत्र तथा महल के पूर्व तक फैली लंबी-चौड़ी छत।

चित्र के अग्रिम भाग में आप जसवंत थड़ को देख सकते हैं।

7. Mehrangarh Fort, Jodhpur, Rajasthan

Jodhpur is situated at a height of 235 m on a range of sandstone hills about 386 kms away from Jaipur. It was founded by Rao Jodha in 1459 A.D. This Fort, popularly known as Mehrangarh, is 122 m above the plains and is enclosed by a high wall with bastions. Its eastern towers and bastions are the strongest. The Fort is guarded by seven gates of which the fourth gate has been destroyed. The first gate, Fateh Pol is between twin bastions and has a curved barbican, its lintel is supported on corbels. Gopal gate, Bhairon gate and Dodhkangra gates have elegant arches. The sixth gate, Loha Pol has the hand prints of fifteen royal *satis,* wives of the Maharaja. this Loha Pol controls the final turn of the path of the fort round the northern end. The seventh gate, Suraj Pol leads sideways from the eastern passage into the durbar court. The Fort contains Moti Mahal, Phool Mahal, the royal ladies apartments (*zenana*), Salim Kot, Murli Manoharji temple, Kalka temple, Chamunda temple, Chamunda-ki-Nandi and the two small tanks namely the Rani Talao and the Gulab Sagar to the south. The Fort summit is divided into three areas, the palace of the north-west, the strongly fortified area to the south edge of the cliff and a long wide terrace to the east of the palace.

In front of the Mehrangarh Fort in the picture you can see the Jaswant Thada.

8. अग्रभाग, जनाना महल, मेहरानगढ़ का किला, जोधपुर, राजस्थान

मेहरानगढ़ किले के गढ़ महल के दो तिहाई भाग में विस्तृत *जनाना* का निर्माण महाराजा जसवंत सिंह ने सन् 1670 में करवाया था। इसी *जनाना* का एक मुख्य प्रांगण मोती महल चौक है। इसे मोती विलास के नाम से जाना जाता है। *जनाना* में जाली वाले असंख्य झरोखे हैं, जिन पर वक्राकार छज्जे हैं। यह संपूर्ण *जनाना* रेतीले पत्थर को तक्षित कर बनाया गया है तथा इस पर सफेद रंग किया गया है। *जनाना* के झरोखे में लगी जालियों की प्रचुर मात्रा महल के अग्रभाग को लटकती डोरियों का रूप सा प्रदान करती है। तोरणिका तथा दीवारगीर के बीच एक संकरी दीर्धा, जोकि प्रत्येक कमरे के आगे से गुजरती है, इस *जनाने* की अनूठी विशेषता है।

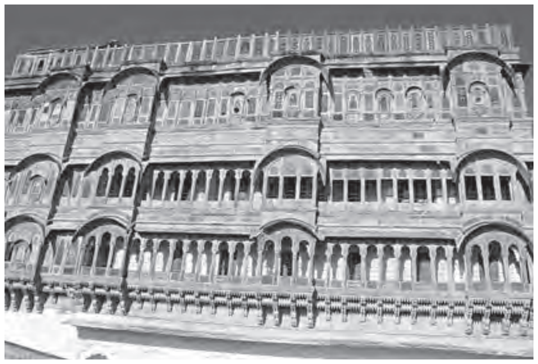

8. Facade, Zenana Mahal, Mehrangarh Fort, Jodhpur, Rajasthan

The Garh palace of Mehrangarh Fort, of which about two third is a *zenana,* was constructed during 1670 A.D. by Maharaja Jaswant Singh. A major court of the *zenana* is Moti Mahal chowk otherwise known as Moti Vilas. This *zenana* contains numerous *jharokhas* (small, projecting balcony) decorated with *jali* work screens and capped by curved roofs. The whole structure is carved from sandstone and painted white. The profusion of *jalis* creates an illusion of delicate lace work. The narrow gallery between the arcade and the bracket of the stone supporting the facade - a narrow strip along the edge of each room - is a unique feature peculiar to the Jodhpur *zenana.*

9. जसवंत थड़, जोधपुर, राजस्थान

जसवंत थड़ वास्तव में शाही छतरियों का समूह है, जो सन् 1899 में महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की स्मृति में निर्मित हुई थी। यहीं पर एक कक्ष में जोधपुर के शासकों के तैल चित्र भी हैं। ये शाही छतरियां वास्तव में दिवंगत शासकों की स्मारक है, जो उनकी स्मृति में निर्मित की गई थी।

9. Jaswant Thada, Jodhpur, Rajasthan

Jaswant Thada, a cluster of royal cenotaphs of royal *chhatries* was built in 1899 A.D. in the memory of Maharaja Jaswant Singh II. The cenotaphs of the Jaswant Thada also has portraits of the rulers of Jodhpur. Royal *chhatries* were built to commemorate the place where royalty had been cremated and also served as a memorial to them.

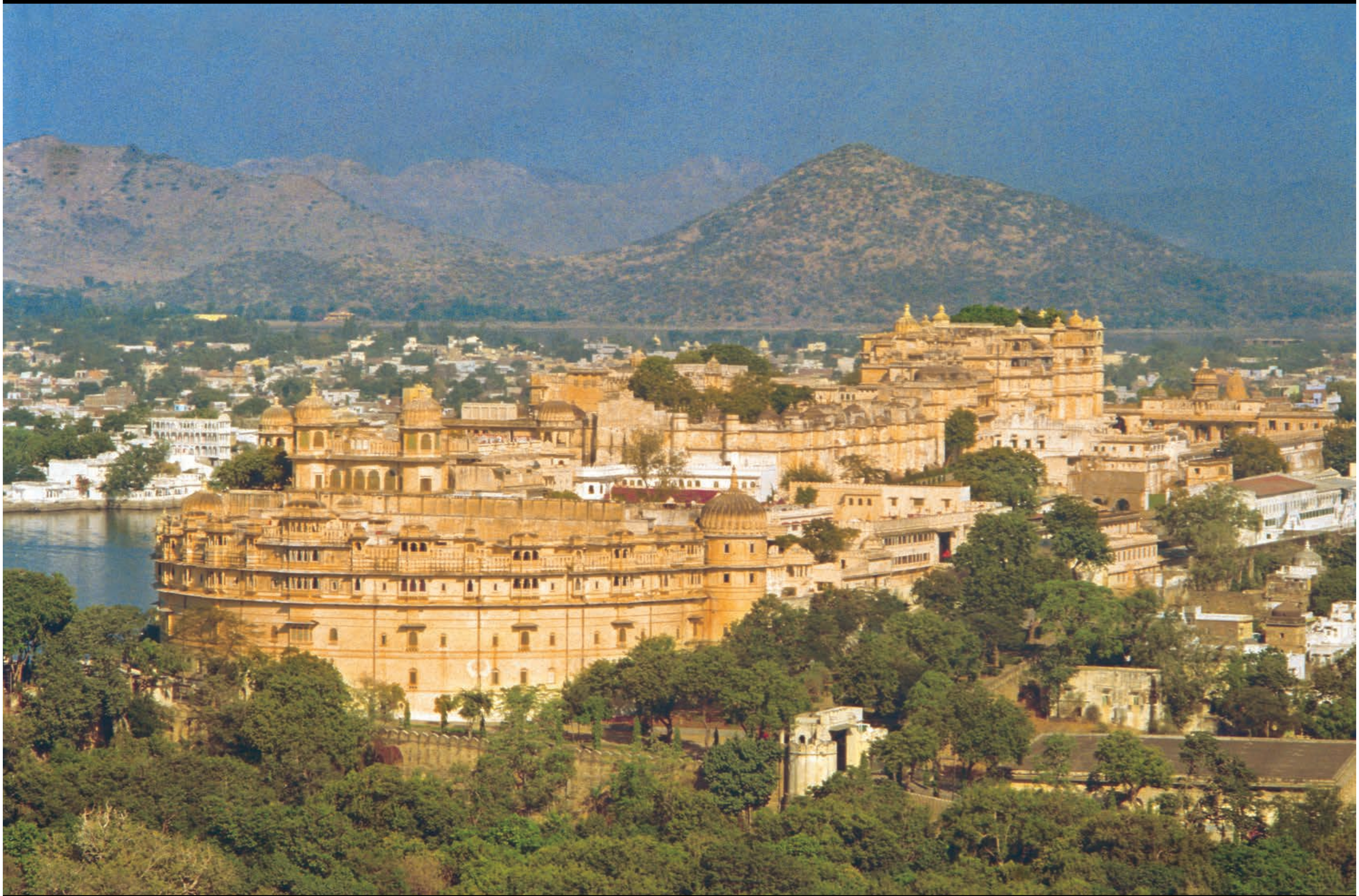

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

10. सिटी पैलेस, उदयपुर, राजस्थान

उदयपुर की स्थापना महाराजा उदयसिंह ने की थी तथा यह जोधपुर से 250 किलोमीटर दूर है। महाराजाओं का यह किला पिछोला झील के किनारे पर स्थित है। महल का पूरा परिसर भव्य है तथा यह ग्रेनाइट और संगमरमर से बनाया गया है। इसके दोनों कोनों में अष्टकोणीय गुंबदों वाली मीनारें हैं। इसके बाह्य भाग पर श्वेत रंग हैं। वैसे यह किला पूर्वाभिमुखी है। बड़ी पोल से होकर इसमें प्रवेश किया जा सकता है। यहीं शाही नगाड़े भी रखे हैं। तोरण पोल के साथ-साथ सूरज पोल भी है। तोरण पोल में से होकर गुजरने वाला रास्ता एक बड़े चौक में खुलता है। इस चौक के दोनों तरफ छोटे-छोटे चौक हैं, जिनसे होकर *जनाना* तथा *मर्दाना* में जाया जा सकता है। इस महल में अनेक लघु आकार के महल भी हैं। शीश महल में शीशे का जड़ाऊ कार्य है, तो कृष्ण विलास महल में विभिन्न विषयों को दर्शाने वाले लघु चित्र। चीन तथा हालैंड की नीली एवं श्वेत टाइल्स वाला चीनी का चित्र महल इस राजमहल का मध्य भाग है। माणिक महल माणिक्य व चीनी मिट्टी तथा मोती महल शीशे के कार्य के लिए प्रसिद्ध है। भीम विलास महल में राधा कृष्ण से संबंधित कहानियों के दृश्य दीवारों पर चित्रित हैं तो प्रीतम विलास महल के मोर चौक की दीवारों पर बहुत महीन रूप में मोर चित्रित है। बड़े महल के हरे-भरे बगीचे तथा फव्वारे एवं जनाना महल आकर्षक और सुंदर ढंग से निर्मित हैं।

उदयपुर का यह सिटी पैलेस मुगलिया सजावटी शैली तथा राजपूतानी सैनिक वास्तुकला का सुंदर मिश्रण है।

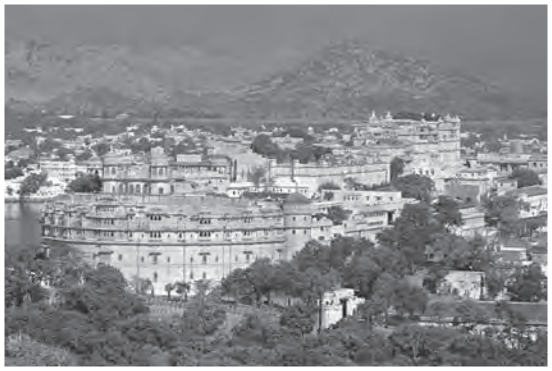

10. City Palace, Udaipur, Rajasthan

Udaipur, the beautiful city of lakes is situated about 259 kms from Jodhpur and was founded by Maharana Udai Singh. The City Palace of the Maharanas, which stands along the banks of the Pichola lake, is an impressive complex of buildings in granite and marble flanked by octagonal corner towers surmounted by cupolas. The exterior is plastered in white colour. The palace faces the east. The entrance is through the Badi Pol, which contains the royal drums. The Suraj Pol is in line with Toran Pol, the main gate of the palace building. The Toran Pol, which one could enter mounted on horseback leads into a large *chowk,* flanked by two smaller palaces. The Sheesh Mahal is decorated with inlay mirror work and the Krishna Vilas with episodes from stories painted in the miniature style. Blue and white Chinese and Dutch tiles are used in Chini-Ki-Chitra Mahal which is the central pavilion of the palace. The Manak Mahal has glass and porcelain and the Moti Mahal is famous for its mirror work. The scenes from the Radha-Krishna stories are painted on the walls of the Bhim Vilas, and the intricately crafted peacocks in fine mosaic relief on the walls of Mor chowk of Pritam Vilas. The Zenana Mahal, gardens and fountains of Bada Mahal are beautifully constructed.

The Udaipur City Palace is a blend of Mughal decorative art and Rajput military architecture.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

11. लेक पैलेस, उदयपुर, राजस्थान

14वीं शताब्दी में पिछोला झील बनाई गई थी। हरी-भरी पहाड़ियों से घिरी इस झील के अनेक घाट तथा आसपास बाग-बगीचे हैं तथा यह उदयपुर शहर के सौंदर्य को स्वर्गिक बनाते हैं।

श्वेत संगमरमर से निर्मित जग निवास शाही परिवार के गर्मियों में रहने का महल था। इस महल के छज्जे तथा खिड़कियां झील की तरफ खुलते हैं। इस हवादार परिसर का फर्श संगमरमर का है, तो स्तंभ ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित। इसके बाग बगीचे व फव्वारे सुव्यवस्थित है तथा कमरे अच्छी प्रकार से अलंकृत। इसके सज्जन निवास में कमल के फूलों के मध्य नृत्य करती नृत्यांगनाओं को दर्शाने वाले अनेक भित्तिचित्र हैं। इनके अलावा इसके प्रांगण में कुमुदिनी का तालाब भी है। जग निवास को अब होटल का रूप दे दिया गया है तथा यह लेक पैलेस होटल के नाम से जाना जाता है।

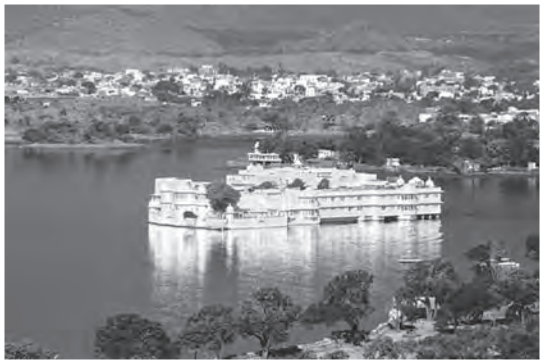

11. Lake Palace, Udaipur, Rajasthan

Lake Pichola was formed in the fourteenth century A.D. Fringed with green hills and studded with ghats and gardens, the lake provides an ethereal beauty to Udaipur.

Lake palace also known as Jag Niwas is built from white marble and was the summer palace of the former royal family. Its balconies and windows overlook the lake. This airy complex has marble floors and granite columns. The gardens and fountains are well laid and the rooms are beautifully decorated. The Sajjan Niwas or Lotus suite of the palace contains murals which depict girls dancing among lotus leaves. In the courtyard there is a lily pond. Jag Niwas has now been converted to a hotel and is called the Lake Palace Hotel.

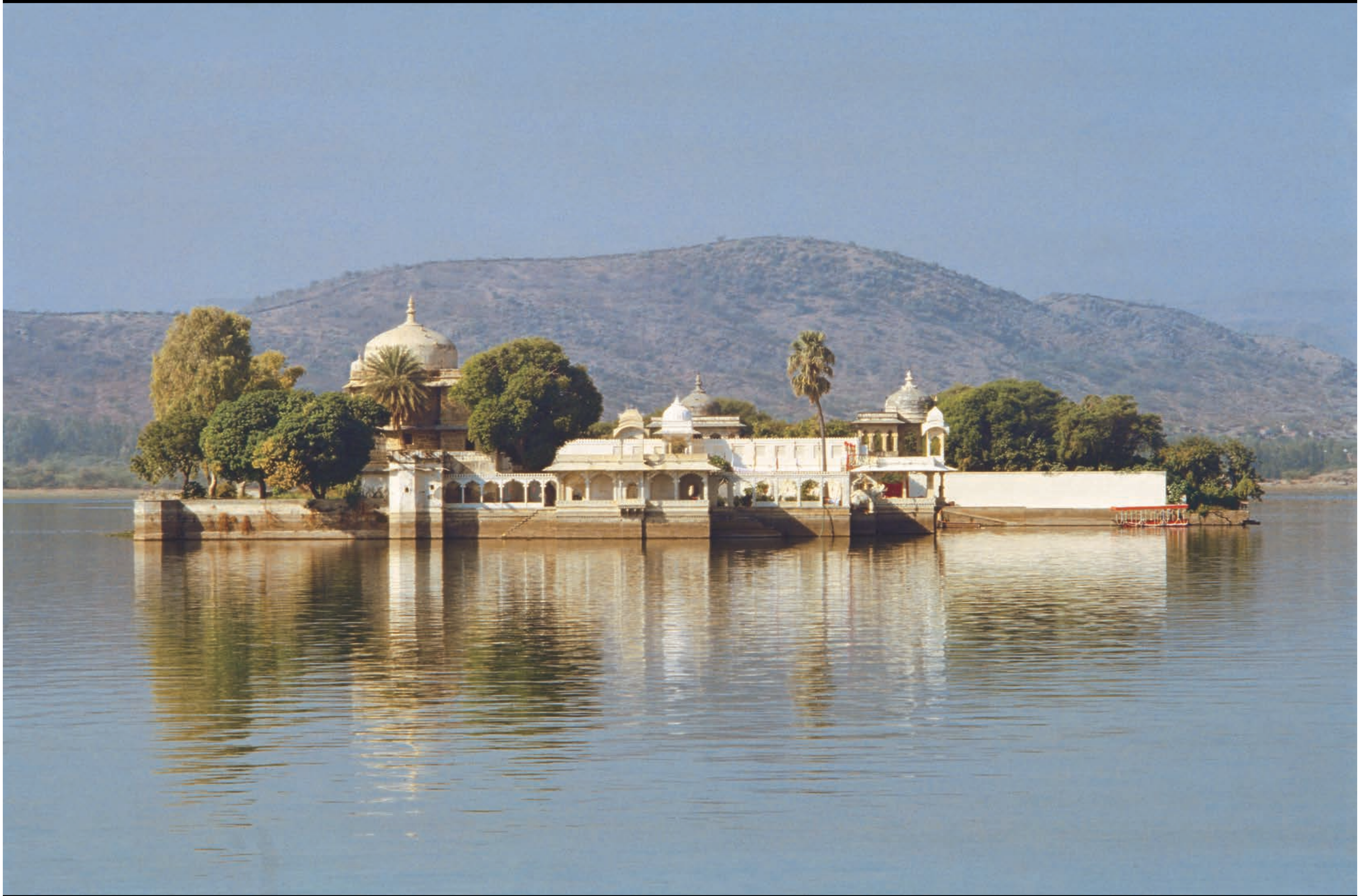

12. जग मंदिर, उदयपुर, राजस्थान

उदयपुर में स्थित यह प्रसिद्ध जग मंदिर पिछोला झील के दक्षिणी द्वीप पर सन् 1551 में निर्मित हुआ था तथा इसका गुंबदाकार मंडप, अर्थात् गुल महल इसकी एक विशिष्ट पहचान है। जिसे कर्ण सिंह ने बनवाया था। यह प्रांत में स्थित मुगल स्थापत्यकला शैली में निर्मित कुछ भवनों में से एक है। शहजादा खुर्रम, जो बाद में बादशाह शाहजहां के नाम से प्रसिद्ध हुआ था, सन् 1623 में यहां रहा करता था, जब उसने अपने पिता जहांगीर के खिलाफ विद्रोह किया था।

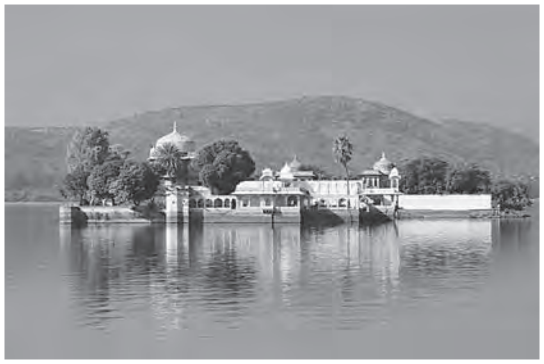

12. Jag Mandir, Udaipur, Rajasthan

The Jag Mandir, which is on the southern island of the Pichola lake was built in 1551 A.D. The domed pavilion or Gul Mahal, which is its greatest landmark, was commenced by Karan Singh. It is one of the few examples of Mughal style of architecture in the state. It is said, that in 1623 A.D. Prince Khurram the future Emperor Shahjahan, lived here when he revolted against his father, Jahangir.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

13. कुंभलगढ़ का किला, कुंभलगढ़, राजस्थान

महाराणा कुंभा द्वारा बनवाया गया कुंभलगढ़ का यह किला एक भव्य पहाड़ी किला है। उदयपुर से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह किला समुद्र तल से 1087 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। तेरह शिखरों से घिरा हुआ यह किला इस पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी पर स्थित है। मेवाड़ में चितौड़गढ़ का किला तथा कुंभलगढ़ का किला सर्वाधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

इसकी चारदीवारी काफी चौड़ी है तथा तोपखाना अत्यंत सुसज्जित। इसमें सैनिकों एवं आम लोगों के रहने का पर्याप्त स्थान भी था। इसे बनाने में लगभग 15 वर्ष का समय लगा था। गहरे दर्रे तथा घने जंगल के बीच से गुजर कर ही इस तक पहुंचा जा सकता है। इस किले के सात विशालकाय दरवाजे, अपने आप में एक दूसरे को समेटे हुए सात परकोटे तथा वृत्ताकार बुर्ज एवं निगरानी के लिए बनी मीनारें सभी आपस में मिलकर इसे अभेद्य बनाते हैं। अनेक दरवाजों के अलावा इसमें कुंभश्याम, नीलकंठ तथा कुबेर आदि के मंदिर भी हैं।

इस किले की बाहरी दीवारें कई वर्गमील का क्षेत्र घेरे हैं। आंतरिक परकोटे की सतह काफी ऊंची है, जिन पर राणाओं का बादल महल सुशोभित है। इस किले के अनेक कमरे उन्नीसवी शताब्दी में रंगे गए हैं।

13. Kumbhalgarh Fort, Kumbhalgarh, Rajasthan

Kumbhalgarh is a spectacular hill fort built by Maharana Kumbha, at a height of 1087 m above sea level and is about 90 kms from Udaipur. It lies on the top most ridge of the hill, surrounded by thirteen other peaks. The Chittorgarh Fort and the Kumbhalgarh Fort are the two most important forts of Mewar.

The Kumbhalgarh Fort has four wide walls, and it was well equipped with batteries, and sufficient accommodation for the troops and the public. It took fifteen years to complete the fort. The approach is impressive across deep ravines and through thick jungles. Seven massive gates guard the approaches, while seven ramparts, one within the other reinforced by rounded bastions and huge watchtowers, render the fort impregnable. Besides many gates, it has several temples like Kumbashyam, Nikhanth and Kuber within the fort.

The outer wall embraces an area of several square miles. The tiers of inner ramparts rise to the summit, which are crowned by the Badal Mahal of the Ranas. The palace has several sets of rooms furnished in pastel colours in the nineteenth century A.D.

14. प्राचीर, कुंभलगढ़ का किला, कुंभलगढ़, राजस्थान

कुंभलगढ़ के किले की बाहरी दीवारें कई वर्गमील का क्षेत्र समेटे हैं। इसकी भव्यता की तुलना चीन की महान् दीवार की भव्यता से की जा सकती है।

14. Ramparts, Kumbhalgarh Fort, Kumbhalgarh, Rajasthan

The outer wall of the Kumbhalgarh Fort embraces an area of several square miles. This wall is comparable to the grandeur of the Great Wall of China.

15. अलवर का महल, अलवर, राजस्थान

अलवर शहर के महल का निर्माण राजा बख्तावर सिंह ने सन् 1793 में करवाया था तथा इसमें विभिन्न शैलियों में विभिन्न भवनों का निर्माण करवाया गया था। महल के अग्रभाग में एक अलंकृत तालाब है। इसके आंतरिक भाग की एक विशेषता शीश महल है, जिसमें शीशों में बंद राजपूत शैली में लघु चित्र बनाए गए हैं। इन्हीं शीशों के कमरे के समीप शाही पुस्तकालय तथा शास्त्रागार भी हैं। शाही पुस्तकालय में प्राचीन पांडुलिपियां हैं, जिनमें सन् 1848 की सुंदर चित्रित गुलिस्तां की पांडुलिपि भी है। शास्त्रागार में रत्न जड़ित अस्त्रों-शस्त्रों का संग्रह है।

यह महल राजपूत तथा मुगल स्थापत्य कला के संमिश्रण का बेजोड़ नमूना है।

15. Alwar Palace, Alwar, Rajasthan

The building of the Alwar City Palace was commenced in 1793 A.D. by Raja Bakhtawar Singh. It consists of a varied group of buildings of different styles of architecture. In front of the palace there is a large ornamental tank. The interior of the palace is notable for the Sheesh Mahal which is dotted with Rajput miniature paintings sealed under glass. Near the Sheesh Mahal is the armoury and the royal library, which contains a fine collection of oriental manuscripts including a copy of a beautifully illustrated Gulistan manuscript of 1848 A.D. It also has a rich collection of bejewelled sabres, swords and weapons.

The Palace is a delicate rendering of the style which emerged out of the blend of Rajput and Mughal style of architecture.

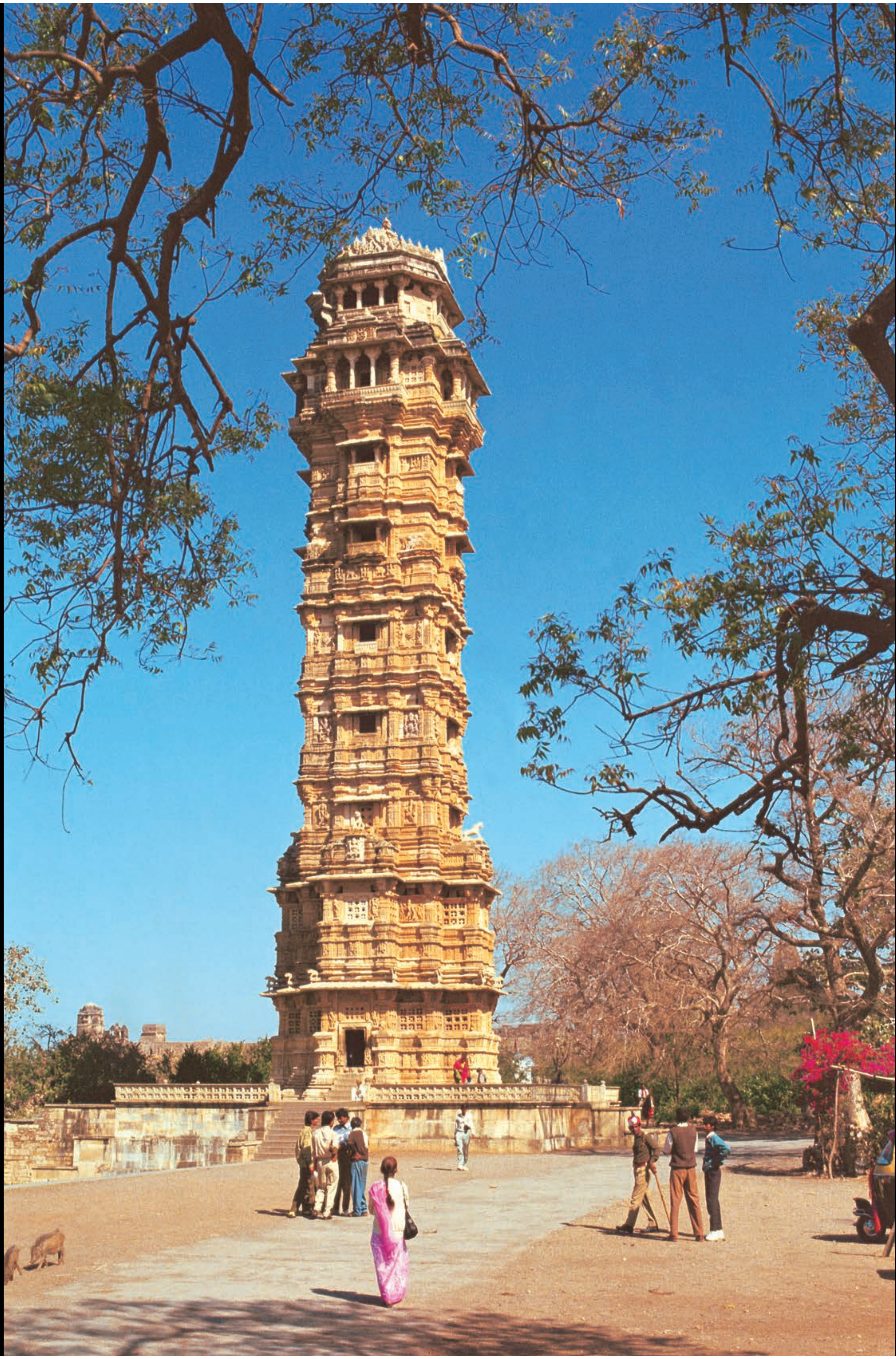

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

16. जय स्तंभ, चित्तौड़गढ़ का किला, चितौड़गढ़, राजस्थान

मेवाड़ के शक्तिशाली राजाओं में से एक राणा कुंभा द्वारा निर्मित यह जय स्तंभ एक प्रकार से 15वीं शताब्दी की जैन वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। इस स्तंभ का निर्माण सन् 1440 में मालवा के महमूद खिलजी पर प्राप्त की गई विजय के उपलक्ष्य में करवाया गया था तथा वास्तुकार जैत ने इसका डिजाईन तैयार किया था इसे एक चट्टान पर चूने पत्थर से बनाया गया था। यह नौ मंजिली है तथा धरातल से इसकी कुल ऊंचाई 37.2 मीटर है। स्तंभ के प्रत्येक स्तर पर किसी न किसी मंदिर से जुड़ा मंडप, छज्जेदार खिड़कियां हैं तथा हिंदू देवी-देवताओं को प्रचुर रूप से उत्कीर्ण किया गया है। नौवी मंजिल पर एक तिजोरी है, जिस पर भगवान कृष्ण को गोपियों के साथ रास करते दर्शाया गया है।

16. Victory Tower, Chittorgarh Fort, Chittorgarh, Rajasthan

Victory Tower or Jaya Stambh is a masterpiece of fifteenth century revivalist Jain architecture, built by Rana Kumbha, one of the most powerful Kings of Mewar. It was designed by an architect called Jaita to commemorate the victory over Mahmud Khalji of Malwa in 1440 A.D. The tower was mainly built by compact limestone and the quartz rock on which it stands. It has nine storeys rising to 37.2 m above the ground level. In each tier of this tower, there is a *mandapa* associated with a temple, enriched with balconied windows and is carved profusely with the gods of the Hindu pantheon. The ninth storey has a vault with a sculptured representation of Lord Krishna surrounded by dancing *gopis.*

17. डीग का महल, डीग, राजस्थान

बदन सिंह द्वारा स्थापित जाट साम्राज्य की राजधानी डीग थी, जो कि भरतपुर से लगभग 32 किलोमीटर दूर है। किला तथा रासरंग के अन्य महल इस क्षेत्र की तत्कालीन स्थापत्यकला की दृष्टि से महत्वूपर्ण है।

डीग स्थित बदन सिंह का यह किला पुराना महल के नाम से भी जाना जाता है तथा समतल भूमि पर निर्मित है। अत्यंत सुदृढ़ यह किला देखने में इकहरा सघन भवन लगता है। किले के अंदर अनेक कक्ष तथा दो खुले चौक हैं, लेकिन इनके बावजूद यह देखने में आयताकार लगता है। वर्तमान में इसके आंतरिक कक्षों में सरकारी कार्यालय कार्य कर रहे हैं। इन कक्षों का ऊपरी भाग सजावटी है तथा उस पर गुंबदें एवं ऊंची गैलरी है। किले का मुख्य प्रवेश सिंह पोल द्वार है। यह विशालकाय दरवाजा मेहराबदार है तथा शेरों आदि की उत्कीर्ण मूर्तियों से अलंकृत है। सूरज दरवाजा, नंगा दरवाजा तथा गोपाल सागर और रूप सागर नामक दो तालाब इस किले की वास्तुकला के आकर्षण के अन्य केंद्र हैं। प्रस्तुत चित्र में गोपाल सागर में महल के प्रतिबिंब को देखा जा सकता है।

17. Deeg Palace, Deeg, Rajasthan

Deeg was the capital of the Jat Kingdom founded by Badan Singh. It is situated about 32 kms from Bharatpur. The fortress and the pleasure palaces of Deeg are of major architectural importance of that period.

Badan Singh's palace at Deeg, also known as Purana Mahal, is a single continuous mass of building built on a plain with little fortification. Inside the palace there are apartments, now used for Government offices, with two open *chowks,* however the building is a rectangular block. It's upper portion consists of a number of domes and galleries. The main entrance of the palace is via the Singh Pol. This gate has a huge archway ornately carved with lions. some other architectural features of the palace are the Suraj Gate, the Nanga Gate and the two water tanks the Gopal Sagar and the Rup Sagar. In the picture the reflection of the palace can be seen in the Gopal Sagar.

18. बूंदी का किला, बूंदी, राजस्थान

बूंदी दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में स्थित है तथा सन् 1342 में राव देवहर ने यहां एक किला बनवाया था। आमतौर पर इस किले को तारागढ़ के नाम से जाना जाता है। आकार में यह चौकोर है तथा कोनों में विशाल बुर्ज स्थित हैं। इसकी पश्चिमी दीवार के मध्य में एक सुंदर प्रवेशद्वार है तथा पूर्वी दीवार के मध्य के परकोटे मोखेदार हैं, तथा ऊपरी मुंडेर काफी ऊँची है। किले के पश्चिम के मुख्य दरवाजे के दोनों तरफ अष्टकोणीय मीनारें हैं तथा सुरक्षा के लिए दृढ़ गढ़गज। मुख्य द्वार पर रक्षकों के सुदृढ़ कमरे हैं। किले में पत्थरों से बनी विशालकाय भीमबुर्ज दूर से ही देखी जा सकती है तथा उसमें 16वीं शती की प्रसिद्ध तोप गर्भगंजम् रखी हुई थी, जो कि अब खो चुकी है। तारागढ़ के रानी महल की दीवारें महीन लघु चित्रों से सुसज्जित हैं तथा खिड़कियों में रंगीन शीशें सुशोभित हैं। समीप के विशाल तालाब में रानी महल का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। बूंदी के हर किले में अनेक जलाशय है। सवीर्ण-धा का कुंड भी इन्हीं में से एक है। सन् 1654 में बना यह जलाशय गहरा चौरस और पायदान वाला है। एक प्रकार से यह त्रिआयामी ज्यामितीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है।

18. Bundi Fort, Bundi, Rajasthan

Bundi is situated in south-east Rajasthan. Bundi Fort was constructed by Rao Deva Hara in 1342 A.D. This fort is popularly known as Taragarh Fort. It is square in plan with large corner bastions. In the middle of the west wall there is a fine gateway and in the middle of the east wall, a postern. The ramparts are crenellated, with high parapets. The main gate, to the west is flanked by octagonal towers protected by a strong barbican. The main entrance has vaulted guard rooms. the fort is dominated by a huge masonry tower, the Bhim Burj, which was used to house one of the most famous cannons of this region, the sixteenth century Garbh-Ganjam (now lost). The Rani Mahal at Taragarh, stands reflected in a large tank, with delicate fading miniatures on walls and coloured glasses in windows. Bundi Fort contains many water tanks, one among them is the Sabirna-Dha-Ka-Kund. It is a deep, square stepped water tank, built in 1654 A.D. It is a fine example of three dimensional geometrical architecture.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

19. जूनागढ़ का किला, बीकानेर, राजस्थान

सन् 1488 में राव जोधा के पुत्र बीका द्वारा बीकानेर स्थापित किया गया था। बीकानेर शहर तक पहुंचने का मार्ग शानदार है और यह एक ऊंची उठी हुई भूमि पर स्थित है। इसके चारों तरफ 5-6 किलोमीटर चौड़ी पत्थर की एक मोखेदार दीवार है। इसके पांच मुख्यद्वार एवम् तीन भूमिगत गलियारे हैं तथा इसकी दीवारों की ऊंचाई 4.6 मी. से 9.2 मी. के बीच है।

सन् 1588 से 1593 के दौरान राजा राय सिंह ने इस किले को बनवाया था। इसके सम्मुख एक सार्वजनिक मैदान है। इसकी बाहरी दीवारों की परिधि लगभग 990 मीटर है।

यह किला राजाओं तथा राज प्रमुखों द्वारा निर्मित विभिन्न सैंतीस महलों तथा मण्डपों के लिए जाना जाता है। इस किले का मुख्य प्रवेश सूरजपोल से होकर है। इस प्रवेश द्वार के सम्मुख पत्थर से बने हाथियों पर सवार जयमल तथा पत्ता नामक दो महान योद्धाओं की मूर्तियां हैं। चौक की विपरीत दिशा में राजा कर्ण सिंह द्वारा निर्मित कर्ण महल (दीवान-ए-आम) है। छत को सहारा देने के लिए स्तंभों पर घुमावदार महराबें हैं। कर्ण महल के ऊपर शाही आवास कक्ष-गज मंदिर है। इस गज मंदिर की छत पर छत्र निवास के ऊपर लघु मंडप है। कर्ण महल से होकर डूंगर-निवास तक जाया जा सकता है। डूंगर निवास की दीवारें चित्रित हैं तथा उसमें सफेद संगमरमर का बना एक तालाब है, जिसमें होली के उत्सव पर रंग मिश्रित पानी भरा जाता था। किले का प्राचीनतम कक्ष लाल निवास है। इसकी हर दीवार विशेष शैली में समान रूप से पुष्प चित्रों से अलंकृत है। दक्षिण में चौक के तरफ के छज्जों में जालियां लगी हैं।

फूल महल के साथ बने चंद्र महल तथा गज मंदिर की दीवारें सुंदर रूप से चित्रित है, तथा इनका निर्माण गज सिंह ने करवाया था। फूल महल में फूलों को चित्रित किया गया है तथा उनमें शीशे का महीन जड़ाऊ कार्य भी हुआ है। अनूप महल में लाल रेतीले पत्थरों और शीशे के जड़ाऊ कार्य वाला राज तिलक कक्ष है। सुन्दर गंगा निवास (सभा कक्ष) 19वीं शताब्दी में जोड़ा गया था।

19. Junagarh Fort, Bikaner, Rajasthan

Bikaner was founded by Bika, son of Rao Jodha in 1488 A.D. The approach to the city of Bikaner is magnificent and it is situated on a raised ground. It is encircled by a 5.6 km. long crenellated stone wall. There are five gates and three underground passages, the walls varying in height between 4.6 and 9.2 m.

Junagarh Fort was built by Raja Raj Singh, between 1588 and 1593 A.D. This fort is situated in front of the public park. Its outer walls are approx. 990 m in circumference. The fort is known for its range of thirty-seven palaces and pavilions built by chieftains and kings.

Junagarh Fort's main entrance is through the Suraj Pol. In front of this gateway, sculptures of two great warriors, Jaimal and Patta are mounted on painted stone elephants. Karan Mahal (Diwan-i-Am) built by Raja Karan Singh, is on the opposite side of the *chowk.* The ceiling is supported by a continuous arcade of cusped arches over balustrade and fluted columns. Above the Karan Mahal is Gaj Mandir, a suite of royal apartments on the roof of which is Chatra Niwas, a small pavilion. Karan Mahal leads to Dungar Niwas which has painted walls and a white marble tank. This was filled with coloured water during the festival of Holi. The oldest apartment of the fort is Lal Niwas. The walls are richly painted with stylized symmetrical, floral motifs. The balconies overlooking the *chowk*, to the south, are fitted with *jalis.*

The walls of Chandra Mahal built together with the Phool Mahal and Gaj Mandir by Gaj Singh are beautifully painted. The Phool Mahal is decorated with motifs of flowers and delicately inlaid mirror work. Anup Mahal contains the coronation hall better known as the Raj Tilak Hall, which is decorated with red sandstone and glass inlay work. The lovely Ganga Niwas (audience hall) was added in the nineteenth century A.D.

20. अनूप महल, जूनागढ़ का किला, बीकानेर, राजस्थान

सन् 1669 से 1698 के बीच निर्मित इस अनूप महल को बाद में महाराजा गज सिंह द्वारा सजाया गया था। यह एक भव्य भवन है तथा लाल एवं सुनहरे रंग वाला राज तिलक कक्ष अत्यंत विलक्षण है। इस कक्ष में रंगों द्वारा अलंकृत लाख का कार्य तथा अपारदर्शी दूधिया शीशों का जड़ाऊ कार्य है। एक अन्य कमरे में अनूठे झूले हिंडोल का एक दुर्लभ उदाहरण भी परिलक्षित है।

एक प्रकार से देखा जाए तो अनूप महल वैभव, अलंकृत राजपूत स्थापत्य कला के चरमोत्कर्ष का सुंदर उदाहरण है।

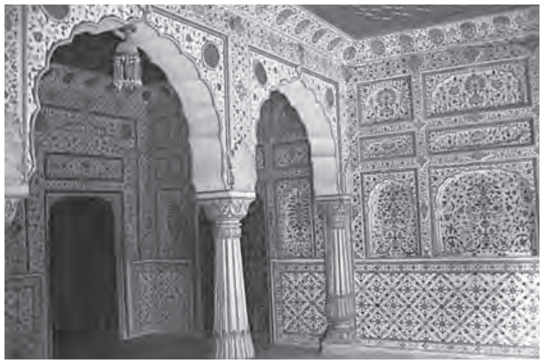

20. Anup Mahal, Junagarh Fort, Bikaner, Rajasthan

Anup Mahal was built between 1669 and 1698 A.D. and was decorated later by Maharaja Gaj Singh. It is an exquisite building with a stunning coronation hall in red and gold. The Raj Tilak Hall, as it is known, is enriched with ornamental lacquer work and opaque glass inlay work. One anti-chamber is vivid acquamarine blue inlaid with gilt. Another room contains the famous *hindola* or swing, a rare specimen.

The Anup Mahal is the epitome of the splendour and decorative art of Rajput architecture and is the fabulous treasure-house of a desert prince.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

21. कोटा महल, कोटा, राजस्थान

चंबल नदी के दाहिने किनारे पर सन् 1579 में कोटा की स्थापना हुई थी तथा वह बूंदी से 39 किलोमीटर दूर है। कोटा महल सन् 1625 के आसपास बूँदी के राव रतन सिंह के पुत्र माधव सिंह द्वारा निर्मित हुआ था।

18वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में भीम महल नामक विशालकाय दरबार कक्ष की दीवारों पर राजपूत शैली के लघुचित्रों द्वारा कोटा के इतिहास और उससे संबंधित दंतकथाओं को दर्शाया गया है। इसमें हाथी दांत तथा आबनूस का सुंदर जड़ाऊ कार्य एवं सतह पर प्रचुर रूप से अलंकरण देखा जा सकता है। हाथी दरवाजे के दोनों तरफ शाही विवाह के जुलूस, हाथियों के चित्र हैं। इन हाथियों की सूंड़ मध्य की मेहराब पर विजय-निनाद तथा स्वागत की मुद्रा में चित्रित हैं। इस महल का बाह्य-भाग सुदृढ़ किलेबंदी तथा पत्थरों पर महीन सजावटी कार्य का मिलाजुला रूप है। बाद में सन् 1723 से 1756 के बीच भीतरी प्रांगण के पश्चिमी भाग में अखाड़े का महल बनवाया गया था। लेकिन पुनः सन् 1888 से 1940 के मध्य इसे पुनर्निर्मित कर और बड़ा बनाया गया था। प्रवेश द्वार के बगल में ही सन् 1864 में हवा महल भी निर्मित किया गया था, जो कि जयपुर स्थित विश्व प्रसिद्ध हवा महल के अग्रभाग की वास्तुकला की प्रतिलिपि है।

21. Kota Palace, Kota, Rajasthan

Kota was founded in 1579 A.D., and is 39 kms. from Bundi. It lies on the east bank of the Chambal river. The Kota palace was built around 1625 A.D. by Madho Singh, son of Rao Ratan Singh of Bundi.

There is a large Durbar Hall, the Bhim Mahal constructed in the early eighteenth century A.D., which is covered with Rajput miniatures depicting the history and legends of Kota. It has some fine ivory and ebony inlay work and a profusion of surface ornamentation. The Elephant Gate is flanked by murals showing a royal wedding procession and bracketed elephants, whose trunks are raised in a gesture of salutation over the central arch. The exterior of the palace is a mixture of robust fortification and delicate ornamental stone work. The Akhade ka Mahal was added to the west of the inner court between 1723 and 1756 A.D. and was later enlarged and reconstructed between 1888 and 1940 A.D. The prominent Hawa Mahal, added next to the entrance to the fort in 1864 A.D. is a copy of the famous facade at Jaipur.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

22. जैसलमेर का किला, जैसलमेर, राजस्थान

जैसलमेर की स्थापना भाटी जाति के प्रमुख रावल जैसल ने सन् 1156 में की थी तथा यह थार के रेगिस्तान में जोधपुर से 287 किलोमीटर दूर स्थित है। यह किला 76 मीटर ऊँची त्रिकुटा पहाड़ी पर स्थित है तथा 9.1 मीटर ऊंची मेहराबदार दीवार से घिरा है। इसी सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए 99 बुर्ज है, जिन पर बंदूकें रखी जाती थीं। किले में स्थित कुएँ पानी के नियमित स्रोत थे। किले के सबसे ऊँचे भाग, जिसके दोनों ओर खुला चौकोर क्षेत्र है, जिसे 'चौहट' कहते हैं, के समीप गढ़ महल स्थित है। इसे जूना महल के नाम से भी जाना जाता है। पत्थरों से निर्मित सभी खिड़कियाँ जालीदार हैं जो कि तत्कालीन राजस्थानी स्थापत्यकला की विशिष्टता थी। सन् 1577 से सन् 1623 के मध्य सूरज पोल, गणेश पोल तथा हवा पोल इस किले में और निर्मित किए गए थे। सूरज पोल सूर्य के बड़े गोलाकार चिह्न से अलंकृत है। इसके दाहिनी तरफ छतरी युक्त ऊँची ताजिया मीनार है तथा इसके छज्जे महीन रूप से तक्षित हैं। इसकी अलंकृत की गई पांच मंजिलें तथा बंगाली शैली की ढलुवाँ छत प्रवेशद्वार के बाद गणेश पोल है, जहां से रास्ता रंग पोल की तरफ जाता है। बाहरी सुरक्षा को मजबूत करने के लिए पहले परकोटे के समानांतर एक दूसरा ऊँचा परकोटा भी है। हवा महल के ऊपर स्थित रंग महल में प्रचुर विवरणयुक्त भित्तिचित्र हैं। सर्वोत्तम विलास इसका एक विशिष्ट भवन है, जिसे नीली टाइल्स तथा शीशे की पच्चीकारी से अलंकृत किया गया है। इसी के समीप 1884 में निर्मित गज विलास है, जिसके पूर्व में चौहट है।

किले के अंदर ही 12वीं से 15वीं शताब्दी के मध्य के अनेक आकर्षक जैन मंदिर है, जिनमें सर्वाधिक पुराना पार्श्वनाथ मंदिर है। ये सभी भव्य मंदिर हैं एवं नया आयाम देते हैं।

22. Jaisalmer Fort, Jaisalmer, Rajasthan

Jaisalmer was founded by Bhatti Chief Rawal Jaisal in 1156 A.D. It is situated in the Thar desert, about 287 kms from Jodhpur. The fort stands on Trikuta hill, 76 m high and is enclosed by an imposing crenellated sandstone wall 9.1 m high. It is reinforced with ninety-nine bastions which were used as gun platforms. Wells within the fort provided a regular source of water. The Garh palace stands at the highest point within the fort bordering two sides of an open square known as the *chauhata.* This is also called the Juna Mahal. All the windows have *jali* screens made of stone, typical of all Rajasthan buildings of the period. Between 1577 and 1623 A.D. the Suraj Pol, Ganesh Pol and Hawa Pol were erected. The Suraj Pol is decorated with a large rounded ornate Sun. To its right is a large tower crowned by a kiosk with delicate carved balconies called Tazia Tower, which has five storeys of ornately carved details with drooping Bengali style roofs. Beyond a spiked entrance gate, on a sharp turn in the path is the Ganesh Pol, which leads to Rang Pol. The outer defences are reinforced by a second rampart, which runs parallel to and higher than the first. Rang Mahal, situated above Hawa Pol, is decorated with murals. Sarvotam Vilas, a most distinguished building is decorated with blue tiles and glass mosaics. Adjacent is the Gaj Vilas, built in 1884 A.D. It stands on a high plinth, its eastern elevation facing the Square or *chauhata.*

Also within the four walls is an interesting group of Jain temples, dating from the twelfth to fifteenth century A.D. The oldest is the Parshawanath temple. They are all impressive and add another dimension to the secular buildings of the city.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां
Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

23. सलीम सिंह की हवेली, जैसलमेर, राजस्थान

सलीम सिंह की हवेली का निर्माण सन् 1815 में एक ऐसे स्थान पर हुआ था, जहां पहले 17वीं शताब्दी के एक भवन के भग्नावशेष थे। इस हवेली की छत खूबसूरत मेहराबदार है तथा साथ ही प्रचुर रूप से उत्कीर्ण दीवारगीर के रूप में मोर हैं। इसके प्रवेश द्वार पर रक्षक के रूप में पत्थर निर्मित एक बड़ा हाथी स्थित है (चित्र में दृष्टिगोचर नहीं है)। भवन के ऊपरी भाग का रूप जलयान सा है, इसी कारण इसे जहाज महल कहा जाता था। ऊपर की दो मंजिलों को क्रमश: कंचन महल तथा रंगमहल कहा जाता है। इन्हें शीशे की पच्चीकारी तथा रंगों से अलंकृत किया गया था, मगर ये आज नहीं हैं।

यह हवेली प्रभावशाली मोहता परिवार से संबंधित थी। आज भी इसका आवासीय उपयोग होता है।

23. Salim Singh Ki Haveli, Jaisalmer, Rajasthan

Salim Singh Ki Haveli was built in 1815 A.D. It was built on an earlier structure which was constructed in the late seventeenth century A.D. The Haveli has a beautiful arched roof and exquisitely carved details with brackets in the form of peacocks. The entrance is guarded by a large stone elephant, (not seen in the picture). The upper portion of the house has been compared to a ship's prow and, is often called Jahaz Mahal. The top two storeys, the Kanchan Mahal and Ranga Mahal were once adorned with glass mosaics and bright colours which no longer exist.

This Haveli belonged to the influential Mohta family and is still used for residential purposes.

24. नाथूमल की हवेली, जैसलमेर, राजस्थान

नाथूमल की यह हवेली दीवान महारावल बारीसाल के लिए 1885 में बनाई गई थी।

इस हवेली के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ पत्थर निर्मित हाथी हैं तथा अग्रभाग में सैनिक, अश्व, हाथी, फूल तथा पक्षी उत्कीर्ण हैं। इसकी डिजाइन एवं रचना दो कारीगरों-हथी और लूलू ने की थी। एक ने दाहिनी तरफ उत्कीर्ण करने का कार्य किया तो दूसरे ने बाईं तरफ, फिर भी दोनों के कार्यों में पूर्ण सामंजस्य दिखाई देता है। एक असाधारण बात यह है कि घर चट्टान का बना है, मसालेदार पत्थरों से नहीं। पहली मंजिल के मुख्य कमरे के सामने की समूची दीवार को काट कर कक्ष बनाया गया है। आंतरिक दीवारों पर सुंदर लघुचित्र चित्रित हैं।

24. Nathumal's Haveli, Jaisalmer, Rajasthan

Nathumal's Haveli was built for the Diwan Maharawal Bari Sal in 1885 A.D.

The entrance is flanked by stone elephants and the entire facade is carved with a riot of ornamental details – soldiers, horses, elephants, flowers and birds. The building was designed and built by two craftsmen-architects Hathi and Lulu. One carved on the left side, the other the right, but the overall impact is one of complete harmony. Extraordinarily, the house is built of rock and not dressed stone. In the main room at the first-floor level, the entire front wall is a huge, single rock carved into a bay. The inner walls are painted with beautiful miniatures.

राजस्थान के दुर्ग, महल तथा हवेलियां

1. आमेर का किला, जयपुर, राजस्थान

अरावली पर्वतमाला में जयपुर से 11 कि. मी. दूर कछवाहा राजपूतों की प्राचीन राजधानी आमेर स्थित है। बादशाह अकबर के राजपूत सेनापति राजा मान सिंह के समय में इस किलेनुमा महल का निर्माण हुआ था। इसे एक खड़ी चट्टान पर आयताकार रूप में निर्मित किया गया था। समीप की छोटी झील में इसका तथा इसकी मीनारों का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। इसके लंबे गेरूए सुनहरे परकोटे को सर्पाकार रूप में चट्टान के ऊपर तथा उस काल की स्थापत्य कला के विवरण के साथ देखा जा सकता है।

इसमें दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, अनेक महल, मंडप तथा जगत शिरोमणि एवं शिला देवी जैसे प्रख्यात मंदिर भी है।

इस किले का गणेश पोल नामक प्रवेश द्वार (आंतरिक चित्र में दर्शित) जयसिंह प्रथम द्वारा बनवाया गया था तथा यह दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास के बीच स्थित है। इसके द्वारा आम जनता किले के निजी कक्षों में प्रवेश करती है। प्रवेश द्वार की ऊपरी दीर्घा में जाली युक्त खिड़कियां बनाई गई थीं, ताकि शाही परिवार की स्त्रियां उनमें से बाहर के क्रिया-कलाप देखें, किन्तु बाहर से उन्हें कोई न देख पाए।

भवनों को सौन्दर्य प्रदान करने के लिए शीशे की पच्चीकारी आम राजपूत शैली है, लेकिन इस भवन में शाहजहाँ के समय के सौन्दर्यकला के नमूने जैसे– मेहराबनुमा स्थापत्यकला का भी उपयोग किया गया है।

2. शीश महल, आमेर का किला, जयपुर, राजस्थान

आमेर के किले का पूर्वी मण्डप दो मंजिला है तथा इसकी एक मंजिल जय मंदिर के नीचे है तथा दूसरी जस मंदिर के ऊपर। जय मंदिर में ही शीश महल – अर्थात्, शीशों का महल तथा दीवान-ए-खास स्थित है।

यह चित्र शीश महल का है तथा इसकी दीवारों तथा छत पर छोटे-छोटे अवतल शीशों को विशिष्ट रूप में जड़ा देखा जा सकता है। संध्या के धुंधलके में जब वहां चिराग जलाए जाते थे, तो सारा शीश महल ऐसे चमक उठता था, जैसे जगमगाते सितारों से चमकता आसमान हो।

भवनों को सौन्दर्य प्रदान करने के लिए शीशे की पच्चीकारी आम राजपूत शैली है, लेकिन इस भवन में शाहजहाँ के समय के सौन्दर्यकला के नमूने जैसे– मेहराबनुमा स्थापत्यकला का भी प्रयोग किया गया है।

3. सिटी पैलेस, चंद्रमहल, जयपुर, राजस्थान

राजस्थान का प्रसिद्ध गुलाबी शहर जयपुर आगरा से 241 किलोमीटर दूर है तथा इसे आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह ने बसाया था। नगर के मध्य में स्थित यह महल सीमा दीवार से घिरा है। इस महल का सर्वाधिक प्राचीन भवन तथा मध्य परिसर चंद्रमहल है, जिसका निर्माण सन् 1724-34 में किया गया था। इसी के धरातल स्तर पर उत्तर की तरफ प्रीतम निवास नामक एक चौड़ा बरामदा है तथा यहीं से संगमरमर की बनी एक नहर बगीचे तक जाती है। चंद्र महल के धरातलीय स्तर का अधिकांश भाग आम लोगों के कक्ष ने घेरा हुआ है। एक प्रकार से यह कक्ष छोटा सा या निम्न परिस्तंभ वाला कक्ष है, जिसकी मेहराब नुकीली है। चंद्रमहल के दक्षिण-पूर्व में दीवान-ए-आम है। वर्तमान में इसे आर्ट गैलरी के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। शाही *जनाना*, चंद्र महल के पश्चिम में स्थित एक विशाल भवन है। बादल महल तथा गोविंद देव मंदिर भवन के दो मुख्य मंडप हैं। चंद्र महल के समीप ही प्रसिद्ध वेधशाला जंतर-मंतर (आंतरिक चित्र) भी है। यह जयसिंह द्वितीय द्वारा 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में बनवाई गई पांचों वेधशालाओं में सबसे बड़ी है। अन्य वेधशालाएं दिल्ली, मथुरा, उज्जैन तथा वाराणसी में है।

4. जयगढ़ का किला, जयपुर राजस्थान

जयगढ़ के किले का निर्माण जयसिंह ने सन् 1600 में करवाया था। किले के नीचे के मैदानी इलाके तथा जयपुर का सुंदर दृश्य देखा जा सकता है। यह किला वास्तव में कछवाहा शासकों के प्रसिद्ध खजाने को सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया था। इसी कारण इस किले की योजना इस प्रकार बनाई गई थी कि यह सुरक्षित रहे तथा दुश्मन अंदर न आ सके। आंतरिक चित्र में पहियों वाली विश्व की विशालतम तोपों में से एक तोप 'जयवान' जो जयगढ़ किले के हथियार कारखाने में बनाई गई थी, का दृश्य देखा जा सकता है।

5. जल महल, जयपुर, राजस्थान

जयपुर की नगर दीवार से बाहर अनेक महलों के भवन है। दक्षिण पूर्व में आगरा-मार्ग पर सिसोदिया रानी महल है। इस महल का निर्माण सवाई जयसिंह की पत्नी के लिए करवाया गया था (चित्र में दृष्टिगोचर नहीं है)। इसी प्रकार उत्तर-पूर्व में आमेर तक अनेक भवनों की कतार भी है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण जल महल है, जिसका निर्माण मनोरंजन के लिए एक कृत्रिम झील मान सागर के बीच किया गया था।

6. हवा महल, जयपुर, राजस्थान

हवा महल, जयपुर शहर की एक मुख्य पहचान है तथा महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने सन् 1799 में इसका निर्माण करवाया था। यह पांच मंजिला भवन राजपूत वास्तुकला का अनूठा उदाहरण है। इसकी अर्द्ध अष्टकोणीय गुलाबी रेतीले पत्थर से बनी खिड़कियां देखते ही बनती हैं, जो कि मधुमक्खी के छत्ते के डिज़ाइन का आभास देती हैं। इसकी पहली दो मंजिलें अपने में तलघर तथा प्रांगण को समेटे हैं तथा शेष तीनों मंजिलों में केवल गलियारे और छज्जे हैं। हवा महल का बाह्य रूप किसी मंदिर के शिखर का आभास देता है। वास्तव में हवा महल का निर्माण इसलिए किया गया था कि शाही परिवार की स्त्रियां इसके 953 आलों तथा खिड़कियों में से राह चलती शोभायात्राओं को देख सकें, किन्तु बाहर से उन्हें कोई न देख सके। आंतरिक चित्र में हवा महल का पृष्ठ भाग देखा जा सकता है।

7. मेहरानगढ़ का किला, जोधपुर, राजस्थान

जोधपुर की स्थापना राव जोधा ने सन् 1459 में की थी। यह 235 मी. ऊंचे रेतीले पत्थर की चट्टानों पर स्थित है तथा जयपुर से इसकी दूरी 386 किलोमीटर है। यह किला मेहरानगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है, जो कि मैदानी क्षेत्र से 122 मीटर ऊपर स्थित है। यह एक ऊंची दीवार से घिरा है तथा इसके अनेक परकोटे हैं। इसकी पूर्वी मीनार तथा परकोटे काफी सुदृढ़ दिखाई देते हैं। वैसे तो इसके सात दरवाजे हैं, मगर चौथा दरवाजा नष्ट हो चुका है। दो बुर्जों के मध्य में स्थित प्रथम दरवाजा फतेहपुर पोल पर मुड़ा गढ़गज है। गोपाल गेट, भौरों गेट, दोधकांगड़ा गेट भव्य मेहराबों से अलंकृत है। इसके छठें प्रवेश द्वार लोह पोल पर सती हुई पंद्रह रानियों के हाथों की छाप देखी जा सकती है। इसी लोह पोल से रास्ता अंतिम बार मुड़कर उत्तरी कोने का चक्कर लगाता किले में चला जाता है। सातवें प्रवेश द्वार सूरज पोल के पूर्वी रास्ते की अगल बगल से दो रास्ते दरबार में जाते हैं। इन प्रवेश द्वारों के अतिरिक्त किले में मोती महल, शाही स्त्रियों का निवास-स्थान फूल महल, सलीम कोट, मुरली मनोहर जी मंदिर, कालका मंदिर, चामुंडा मंदिर, चामुंडा की नदी तथा रानी तालाब और गुलाब सागर नामक दो छोटे तालाब दक्षिण में स्थित है। किले की चोटी तीन क्षेत्रों में विभक्त है – उत्तर पश्चिम का महल, चट्टान के दक्षिण किनारे वाला अत्यंत किलेबंद क्षेत्र तथा महल के पूर्व तक फैली लंबी-चौड़ी छत।

8. अग्रभाग, जनाना महल, मेहरानगढ़ का किला, जोधपुर, राजस्थान

मेहरानगढ़ किले के गढ़ महल के दो तिहाई भाग में विस्तृत *जनाना* का निर्माण महाराजा जसवंत सिंह ने सन् 1670 में करवाया था। इसी *जनाना* का एक मुख्य प्रांगण मोती महल चौक है। इसे मोती विलास के नाम से जाना जाता है। *जनाना* में जाली वाले असंख्य झरोखे हैं, जिन पर वक्राकार छज्जे हैं। यह संपूर्ण *जनाना* रेतीले पत्थर को तक्षित कर बनाया गया है तथा इस पर सफेद रंग किया गया है। *जनाना* के झरोखे में लगी जालियों की प्रचुर मात्रा महल के अग्रभाग को लटकती डोरियों का रूप सा प्रदान करती है। तोरणिका तथा दीवारगीर के बीच एक संकरी दीर्घा, जोकि प्रत्येक कमरे के आगे से गुजरती है, इस *जनाने* की अनूठी विशेषता है।

9. जसवंत थड़, जोधपुर, राजस्थान

जसवंत थड़ वास्तव में शाही छतरियों का समूह है, जो सन् 1899 में महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की स्मृति में निर्मित हुई थी। यहीं पर एक कक्ष में जोधपुर के शासकों के तैल चित्र भी हैं। ये शाही छतरियां वास्तव में दिवंगत शासकों की स्मारक है, जो उनकी स्मृति में निर्मित की गई थी।

10. सिटी पैलेस, उदयपुर, राजस्थान

उदयपुर की स्थापना महाराजा उदयसिंह ने की थी तथा यह जोधपुर से 250 किलोमीटर दूर है। महाराजाओं का यह किला पिछोला झील के किनारे पर स्थित है। महल का पूरा परिसर भव्य है तथा यह ग्रेनाइट और संगमरमर से बनाया गया है। इसके दोनों कोनों में अष्टकोणीय गुंबदों वाली मीनारें हैं। इसके बाह्य भाग पर श्वेत रंग हैं। वैसे यह किला पूर्वाभिमुखी है। बड़ी पोल से होकर इसमें प्रवेश किया जा सकता है। यहीं शाही नगाड़े भी रखे हैं। तोरण पोल के साथ-साथ सूरज पोल भी है। तोरण पोल में से होकर गुजरने वाला रास्ता एक बड़े चौक में खुलता है। इस चौक के दोनों तरफ छोटे-छोटे चौक हैं, जिनसे होकर *जनाना* तथा *मर्दाना* में जाया जा सकता है। इस महल में अनेक लघु आकार के महल भी हैं। शीश महल में शीशे का जड़ाऊ कार्य है, तो कृष्ण विलास महल में विभिन्न विषयों को दर्शाने वाले लघु चित्र। चीन तथा हालैंड की नीली एवं श्वेत टाइल्स वाला चीनी का चित्र महल इस राजमहल का मध्य भाग है। माणिक महल माणिक्य व चीनी मिट्टी तथा मोती महल शीशे के कार्य के लिए प्रसिद्ध है। भीम विलास महल में राधा कृष्ण से संबंधित कहानियों के दृश्य दीवारों पर चित्रित हैं तो प्रीतम विलास महल के मोर चौक की दीवारों पर बहुत महीन रूप में मोर चित्रित है। बड़े महल के हरे-भरे बगीचे तथा फव्वारे एवं जनाना महल आकर्षक और सुंदर ढंग से निर्मित हैं।

उदयपुर का यह सिटी पैलेस मुगलिया सजावटी शैली तथा राजपूतानी सैनिक वास्तुकला का सुंदर मिश्रण है।

11. लेक पैलेस, उदयपुर, राजस्थान

14वीं शताब्दी में पिछोला झील बनाई गई थी। हरी-भरी पहाड़ियों से घिरी इस झील के अनेक घाट तथा आसपास बाग-बगीचे हैं तथा यह उदयपुर शहर के सौंदर्य को स्वर्गिक बनाते हैं।

श्वेत संगमरमर से निर्मित जग निवास शाही परिवार के गर्मियों में रहने का महल था। इस महल के छज्जे तथा खिड़कियां झील की तरफ खुलते हैं। इस हवादार परिसर का फर्श संगमरमर का है, तो स्तंभ ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित। इसके बाग बगीचे व फव्वारे सुव्यवस्थित है तथा कमरे अच्छी प्रकार से अलंकृत। इसके सज्जन निवास में कमल के फूलों के मध्य नृत्य करती नृत्यांगनाओं को दर्शाने वाले अनेक भित्तिचित्र हैं। इनके अलावा इसके प्रांगण में कुमुदिनी का तालाब भी है। जग निवास को अब होटल का रूप दे दिया गया है तथा यह लेक पैलेस होटल के नाम से जाना जाता है।

12. जग मंदिर, उदयपुर, राजस्थान

उदयपुर में स्थित यह प्रसिद्ध जग मंदिर पिछोला झील के दक्षिणी द्वीप पर सन् 1551 में निर्मित हुआ था तथा इसका गुंबदाकार मंडप, अर्थात् गुल महल इसकी एक विशिष्ट पहचान है। जिसे कर्ण सिंह ने बनवाया था। यह प्रांत में स्थित मुगल स्थापत्यकला शैली में निर्मित कुछ भवनों में से एक है। शहजादा खुर्रम, जो बाद में बादशाह शाहजहां के नाम से प्रसिद्ध हुआ था, सन् 1623 में यहां रहा करता था, जब उसने अपने पिता जहांगीर के खिलाफ विद्रोह किया था।

13. कुंभलगढ़ का किला, कुंभलगढ़, राजस्थान

महाराणा कुंभा द्वारा बनवाया गया कुंभलगढ़ का यह किला एक भव्य पहाड़ी किला है। उदयपुर से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह किला समुद्र तल से 1087 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। तेरह शिखरों से घिरा हुआ यह किला इस पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी पर स्थित है। मेवाड़ में चितौड़गढ़ का किला तथा कुंभलगढ़ का किला सर्वाधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

इसकी चारदीवारी काफी चौड़ी है तथा तोपखाना अत्यंत सुसज्जित। इसमें सैनिकों एवं आम लोगों के रहने का पर्याप्त स्थान भी था। इसे बनाने में लगभग 15 वर्ष का समय लगा था। गहरे दर्रे तथा घने जंगल के बीच से

गुजर कर ही इस तक पहुंचा जा सकता है। इस किले के सात विशालकाय दरवाजे, अपने आप में एक दूसरे को समेटे हुए सात परकोटे तथा वृत्ताकार बुर्ज एवं निगरानी के लिए बनी मीनारें सभी आपस में मिलकर इसे अभेद्य बनाते हैं। अनेक दरवाजों के अलावा इसमें कुंभश्याम, नीलकंठ तथा कुबेर आदि के मंदिर भी हैं।

इस किले की बाहरी दीवारें कई वर्गमील का क्षेत्र घेरे हैं। आंतरिक परकोटे की सतह काफी ऊंची है, जिन पर राणाओं का बादल महल सुशोभित है। इस किले के अनेक कमरे उन्नीसवी शताब्दी में रंगे गए हैं।

14. प्राचीर, कुंभलगढ़ का किला, कुंभलगढ़, राजस्थान

कुंभलगढ़ के किले की बाहरी दीवारें कई वर्गमील का क्षेत्र समेटे हैं। इसकी भव्यता की तुलना चीन की महान् दीवार की भव्यता से की जा सकती है।

15. अलवर का महल, अलवर, राजस्थान

अलवर शहर के महल का निर्माण राजा बख्तावर सिंह ने सन् 1793 में करवाया था तथा इसमें विभिन्न शैलियों में विभिन्न भवनों का निर्माण करवाया गया था। महल के अग्रभाग में एक अलंकृत तालाब है। इसके आंतरिक भाग की एक विशेषता शीश महल है, जिसमें शीशों में बंद राजपूत शैली में लघु चित्र बनाए गए हैं। इन्हीं शीशों के कमरे के समीप शाही पुस्तकालय तथा शास्त्रागार भी हैं। शाही पुस्तकालय में प्राचीन पांडुलिपियां हैं, जिनमें सन् 1848 की सुंदर चित्रित गुलिस्तां की पांडुलिपि भी है। शास्त्रागार में रत्न जड़ित अस्त्रों-शस्त्रों का संग्रह है।

यह महल राजपूत तथा मुगल स्थापत्य कला के संमिश्रण का बेजोड़ नमूना है।

16. जय स्तंभ, चित्तौड़गढ़ का किला, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

मेवाड़ के शक्तिशाली राजाओं में से एक राणा कुंभा द्वारा निर्मित यह जय स्तंभ एक प्रकार से 15वीं शताब्दी की जैन वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। इस स्तंभ का निर्माण सन् 1440 में मालवा के महमूद खिलजी पर प्राप्त की गई विजय के उपलक्ष्य में करवाया गया था तथा वास्तुकार जैत ने इसका डिजाईन तैयार किया था इसे एक चट्टान पर चूने पत्थर से बनाया गया था। यह नौ मंजिली है तथा धरातल से इसकी कुल ऊंचाई 37.2 मीटर है। स्तंभ के प्रत्येक स्तर पर किसी न किसी मंदिर से जुड़ा मंडप, छज्जेदार खिड़कियां हैं तथा हिंदू देवी-देवताओं को प्रचुर रूप से उत्कीर्ण किया गया है। नौवी मंजिल पर एक तिजोरी है, जिस पर भगवान कृष्ण को गोपियों के साथ रास करते दर्शाया गया है।

17. डीग का महल, डीग, राजस्थान

बदन सिंह द्वारा स्थापित जाट साम्राज्य की राजधानी डीग थी, जो कि भरतपुर से लगभग 32 किलोमीटर दूर है। किला तथा रासरंग के अन्य महल इस क्षेत्र की तत्कालीन स्थापत्यकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

डीग स्थित बदन सिंह का यह किला पुराना महल के नाम से भी जाना जाता है तथा समतल भूमि पर निर्मित है। अत्यंत सुदृढ़ यह किला देखने में इकहरा सघन भवन लगता है। किले के अंदर अनेक कक्ष तथा दो खुले चौक हैं, लेकिन इनके बावजूद यह देखने में आयताकार लगता है। वर्तमान में इसके आंतरिक कक्षों में सरकारी कार्यालय कार्य कर रहे हैं। इन कक्षों का ऊपरी भाग सजावटी है तथा उस पर गुंबदें एवं ऊंची गैलरी है। किले का मुख्य प्रवेश सिंह पोल द्वार है। यह विशालकाय दरवाजा मेहराबदार है तथा शेरों आदि की उत्कीर्ण मूर्तियों से अलंकृत है। सूरज दरवाजा, नंगा दरवाजा तथा गोपाल सागर और रूप सागर नामक दो तालाब इस किले की वास्तुकला के आकर्षण के अन्य केंद्र हैं। प्रस्तुत चित्र में गोपाल सागर में महल के प्रतिबिंब को देखा जा सकता है।

18. बूंदी का किला, बूंदी, राजस्थान

बूंदी दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में स्थित है तथा सन् 1342 में राव देवहर ने यहां एक किला बनवाया था। आमतौर पर इस किले को तारागढ़ के नाम से जाना जाता है। आकार में यह चौकोर है तथा कोनों में विशाल बुर्ज स्थित हैं। इसकी पश्चिमी दीवार के मध्य में एक सुंदर प्रवेशद्वार है तथा पूर्वी दीवार के मध्य के परकोटे मोखेदार हैं, तथा ऊपरी मुंडेर काफी ऊँची है। किले के पश्चिम के मुख्य दरवाजे के दोनों तरफ अष्टकोणीय मीनारें हैं तथा सुरक्षा के लिए दृढ़ गढ़गज। मुख्य द्वार पर रक्षकों के सुदृढ़ कमरे हैं। किले में पत्थरों से बनी विशालकाय भीमबुर्ज दूर से ही देखी जा सकती है तथा उसमें 16वीं शती की प्रसिद्ध तोप गर्भगंजम् रखी हुई थी, जो कि अब खो चुकी है। तारागढ़ के रानी महल की दीवारें महीन लघु चित्रों से सुसज्जित हैं तथा खिड़कियों में रंगीन शीशें सुशोभित हैं। समीप के विशाल तालाब में रानी महल का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। बूंदी के हर किले में अनेक जलाशय है। सवीर्ण-धा का कुंड भी इन्हीं में से एक है। सन् 1654 में बना यह जलाशय गहरा चौरस और पायदान वाला है। एक प्रकार से यह त्रिआयामी ज्यामितीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है।

19. जूनागढ़ का किला, बीकानेर, राजस्थान

सन् 1488 में राव जोधा के पुत्र बीका द्वारा बीकानेर स्थापित किया गया था। बीकानेर शहर तक पहुँचने का मार्ग शानदार है और यह एक ऊंची उठी हुई भूमि पर स्थित है। इसके चारों तरफ 5-6 किलोमीटर चौड़ी पत्थर की एक मोखेदार दीवार है। इसके पांच मुख्य द्वार एवं तीन भूमिगत गलियारे हैं। इसकी दीवारों की ऊंचाई 4.6 मी. से 9.2 मी. के बीच है।

सन् 1588 से 1593 के दौरान राजा राय सिंह ने इस किले को बनवाया था। इसके सम्मुख एक सार्वजनिक मैदान है। इसकी बाहरी दीवारों की परिधि लगभग 990 मीटर है।

यह किला राजाओं तथा राज प्रमुखों द्वारा निर्मित विभिन्न सैंतीस महलों तथा मण्डपों के लिए जाना जाता है। इस किले का मुख्य प्रवेश सूरज पोल से होकर है। इस प्रवेश द्वार के सम्मुख पत्थर से बने हाथियों पर सवार जयमल तथा पत्ता नामक दो महान योद्धाओं की मूर्तियां हैं। चौक की विपरीत दिशा में राजा कर्ण सिंह द्वारा निर्मित कर्ण महल (दीवान-ए-आम) है। छत को सहारा देने के लिए स्तंभों पर घुमावदार महराबें हैं। कर्ण महल के ऊपर शाही आवास कक्ष-गज मंदिर है। इस गज मंदिर की छत पर छत्र निवास के ऊपर लघु मंडप है। कर्ण महल से होकर डूंगर-निवास तक जाया जा सकता है। डूंगर निवास की दीवारें चित्रित हैं तथा उसमें सफेद संगमरमर का बना तक तालाब है, जिसमें होली के उत्सव पर रंग मिश्रित पानी भरा जाता था। किले का प्राचीनतम कक्ष लाल निवास है। इसकी हर दीवार विशेष शैली में समान रूप से पुष्प चित्रों से अलंकृत है। दक्षिण में चौक के तरफ के छज्जों में जालियां लगी हैं।

फूल महल के साथ बने चंद्र महल तथा गज मंदिर की दीवारें सुंदर रूप से चित्रित है तथा इनका निर्माण गज सिंह ने करवाया था। फूल महल में फूलों को चित्रित किया गया है तथा उनमें शीशे का महीन जड़ाऊ कार्य भी हुआ है। अनूप महल में लाल रेतीले पत्थरों और शीशे के जड़ाऊ कार्य वाला राज तिलक कक्ष है। सुन्दर गंगा निवास (सभा कक्ष) 19वीं शताब्दी में जोड़ा गया था।

20. अनूप महल, जूनागढ़ का किला, बीकानेर, राजस्थान

सन् 1669 से 1698 के बीच निर्मित इस अनूप महल को बाद में महाराजा गज सिंह द्वारा सजाया गया था। यह एक भव्य भवन है तथा लाल एवं सुनहरे रंग वाला राज तिलक कक्ष अत्यंत विलक्षण है। इस कक्ष में रंगों द्वारा अलंकृत लाख का कार्य तथा अपारदर्शी दूधिया शीशों का जड़ाऊ कार्य है। एक अन्य कमरे में अनूठे झूले हिंडोल का एक दुर्लभ उदाहरण भी परिलक्षित है।

एक प्रकार से देखा जाए तो अनूप महल वैभव, अलंकृत राजपूत स्थापत्य कला के चरमोत्कर्ष का सुंदर उदाहरण है।

21. कोटा महल, कोटा, राजस्थान

चंबल नदी के दाहिने किनारे पर सन् 1579 में कोटा की स्थापना हुई थी तथा वह बूंदी से 39 किलोमीटर दूर है। कोटा महल सन् 1625 के आसपास बूँदी के राव रतन सिंह के पुत्र माधव सिंह द्वारा निर्मित हुआ था।

18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में निर्मित भीम महल नामक विशालकाय दरबार कक्ष की दीवारों पर राजपूत शैली के लघुचित्रों द्वारा कोटा के इतिहास और उससे संबंधित दंतकथाओं को दर्शाया गया है। इसमें हाथी दांत तथा आबनूस का सुंदर जड़ाऊ कार्य एवं सतह पर प्रचुर रूप से अलंकरण देखा जा सकता है। हाथी दरवाजे के दोनों तरफ शाही विवाह के जुलूस, हाथियों के चित्र हैं। इन हाथियों की सूंड़ मध्य की मेहराब पर विजय-निनाद तथा स्वागत की मुद्रा में चित्रित हैं। इस महल का बाह्य-भाग सुदृढ़ किलेबंदी तथा पत्थरों पर महीन सजावटी कार्य का मिलाजुला रूप है। बाद में सन् 1723 से 1756 के बीच भीतरी प्रांगण के पश्चिमी भाग में अखाड़े का महल बनवाया गया था। लेकिन पुनः सन् 1888 से 1940 के मध्य इसे पुनर्निर्मित कर और बड़ा बनाया गया था। प्रवेश द्वार के बगल में ही सन् 1864 में हवा महल भी निर्मित किया गया था, जो कि जयपुर स्थित विश्व प्रसिद्ध हवा महल के अग्रभाग की वास्तुकला की प्रतिलिपि है।

22. जैसलमेर का किला, जैसलमेर, राजस्थान

जैसलमेर की स्थापना भाटी जाति के प्रमुख रावल जैसल ने सन् 1156 में की थी तथा यह थार के रेगिस्तान में जोधपुर से 287 किलोमीटर दूर स्थित है। यह किला 76 मीटर ऊँची त्रिकुटा पहाड़ी पर स्थित है तथा 9.1 मीटर ऊंची मेहराबदार दीवार से घिरा है। इसी सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए 99 बुर्ज है, जिन पर बंदूकें रखी जाती थीं। किले में स्थित कुएँ पानी के नियमित स्रोत थे। किले के सबसे ऊँचे भाग, जिसके दोनों ओर खुला चौकोर क्षेत्र है, जिसे 'चौहट' कहते हैं, के समीप गढ़ महल स्थित है। इसे जूना महल के नाम से भी जाना जाता है। पत्थरों से निर्मित सभी खिड़कियाँ जालीदार हैं जो कि तत्कालीन राजस्थानी स्थापत्यकला की विशिष्टता थी। सन् 1577 से सन् 1623 के मध्य सूरज पोल, गणेश पोल तथा हवा पोल इस किले में और निर्मित किए गए थे। सूरज पोल सूर्य के बड़े गोलाकार चिह्न से अलंकृत है। इसके दाहिनी तरफ छतरी युक्त ऊँची ताजिया मीनार है तथा इसके छज्जे महीन रूप से तक्षित हैं। इसकी अलंकृत की गई पांच मंजिलें तथा बंगाली शैली की ढलुवाँ छत प्रवेशद्वार के बाद गणेश पोल है, जहां से रास्ता रंग पोल की तरफ जाता है। बाहरी सुरक्षा को मजबूत करने के लिए पहले परकोटे के समानांतर एक दूसरा ऊँचा परकोटा भी है। हवा महल के ऊपर स्थित रंग महल में प्रचुर विवरणयुक्त भित्तिचित्र हैं। सर्वोत्तम विलास इसका एक विशिष्ट भवन है, जिसे नीली टाइल्स तथा शीशे की पच्चीकारी से अलंकृत किया गया है। इसी के समीप 1884 में निर्मित गज विलास है, जिसके पूर्व में चौहट है।

किले के अंदर ही 12वीं से 15वीं शताब्दी के मध्य के अनेक आकर्षक जैन मंदिर है, जिनमें सर्वाधिक पुराना पार्श्वनाथ मंदिर है। ये सभी भव्य मंदिर हैं एवं नया आयाम देते हैं।

23. सलीम सिंह की हवेली, जैसलमेर, राजस्थान

सलीम सिंह की हवेली का निर्माण सन् 1815 में एक ऐसे स्थान पर हुआ था, जहां पहले 17वीं शताब्दी के एक भवन के भग्नावशेष थे। इस हवेली की छत खूबसूरत मेहराबदार है तथा साथ ही प्रचुर रूप से उत्कीर्ण दीवारगीर के रूप में मोर हैं। इसके प्रवेश द्वार पर रक्षक के रूप में पत्थर निर्मित एक बड़ा हाथी स्थित है (चित्र में दृष्टिगोचर नहीं है)। भवन के ऊपरी भाग का रूप जलयान सा है, इसी कारण इसे जहाज महल कहा जाता था। ऊपर की दो मंजिलों को क्रमशः कंचन महल तथा रंगमहल कहा जाता है। इन्हें शीशे की पच्चीकारी तथा रंगों से अलंकृत किया गया था, मगर ये आज नहीं हैं।

यह हवेली प्रभावशाली मोहता परिवार से संबंधित थी। आज भी इसका आवासीय उपयोग होता है।

24. नाथूमल की हवेली, जैसलमेर, राजस्थान

नाथूमल की यह हवेली दीवान महारावल बारीसाल के लिए 1885 में बनाई गई थी।

इस हवेली के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ पत्थर निर्मित हाथी हैं तथा अग्रभाग में सैनिक, अश्व, हाथी, फूल तथा पक्षी उत्कीर्ण हैं। इसकी डिजाइन एवं रचना दो कारीगरों-हथी और लूलू ने की थी। एक ने दाहिनी तरफ उत्कीर्ण करने का कार्य किया तो दूसरे ने बाईं तरफ, फिर भी दोनों के कार्यों में पूर्ण सामंजस्य दिखाई देता है। एक असाधारण बात यह है कि घर चट्टान का बना है, मसालेदार पत्थरों से नहीं। पहली मंजिल के मुख्य कमरे के सामने की समूची दीवार को काट कर कक्ष बनाया गया है। आंतरिक दीवारों पर सुंदर लघुचित्र चित्रित हैं।

Forts, Palaces and Havelis of Rajasthan

1. Amber Fort, Jaipur, Rajasthan

Amber, the ancient capital of the Kachhawaha Rajputs lies in the rocky Aravalli hills, 11 kms north of Jaipur. Much of what remains of the fortress-palace today was constructed during the reign of Raja Man Singh, the Rajput commmander of Akbar's army. It is built on a steep cliff; rectangular in concept, its towers and white walls are reflected in a small lake. It's long russet gold ramparts adhere to the architectural style of the period.

This fort comprises the Diwan-i-Am, Diwan-i-Khas, several palaces, courtyards and the famous Jagat Shiromani and Shila Devi temples.

The entrance gate of the Amber Palace known as Ganesh Pol (inset) was added by Jai Singh I. Ganesh Pol is situated between the Diwan-i-Am (Public Court) and the Diwan-i-Khas (Private Court). This gate serves as the entrance for the public to the private courts of the palace. The gallery above the Ganesh Pol with lattice work windows was constructed so as to allow the women in the family to watch the activities in the street without being seen from outside.

2. Sheesh Mahal, Amber Fort, Jaipur, Rajasthan

The eastern pavilion of the Amber palace is built in two storeys, one below the Jai mandir and the other above the Jas mandir. The Jai mandir has the Diwan-i-Khas and the Sheesh Mahal, 'The Hall of Mirrors'.

The picture shows the interior of the Sheesh Mahal. The plaster of the wall and ceiling is embedded with tiny concave mirrors forming a variety of designs. When this palace was occupied, lamps were lit after dark, the reflected light in the mirrors of the Sheesh Mahal created an illusion of a multitude of stars in the sky.

Glass mosaic is a common Rajput technique used as decoration in buildings. The particular patterns used here, especially the web of tiny arch-shaped indents, follow the Shahjahani adaptation of this decorative art.

3. City Palace, Chandra Mahal, Jaipur, Rajasthan

Jaipur, the Pink city of Rajasthan which is 241 kms. from Agra was founded by Maharaja Sawai Jai Singh of Amber. The City Palace situated in the centre of the city is surrounded by a boundary wall. the earliest building and the centre of the complex is the Chandra Mahal which was constructed in 1724-34 A.D. The picture shows a seven-tiered, pyramidal structure of the Chandra Mahal. On the ground floor, on the north side, is the broad verandah called the Pritam Niwas, from which a marble channel runs into the formal garden.In the main portion of the ground floor of the Chandra Mahal is situated the "Hall of audience". This is a small and rather low peristyle hall with the familiar cusped arches. To the south-east of the Chandra Mahal is the building known as Diwan-i-Am (at present this is serving as an art gallery). The royal women apartments (*zenana*) lies in the west of Chandra Mahal, which is a vast building. The two principal pavilions of the palace are the Badal Mahal and the Govind Deo temple. Close to the Chandra Mahal is the famous Jantar Mantar constructed in 1718-34 A.D., (inset picture) the largest of the five observatories built by Jai Singh II in the early eighteenth century A.D., the others are at Delhi, Mathura, Ujjain and Varanasi.

4. Jaigarh Fort, Jaipur, Rajasthan

The imposing Jaigarh Fort was built in 1600 A.D. by Raja Man Singh. It offers a beautiful view of the plans and the city of Jaipur. This fort housed the famous treasures of the Kachhawaha rulers in deep vaults. The fort was designed in a manner that no enemy could enter as it was well protected from all sides. In the (inset) picture you can see Jaiwaan, one of the largest cannon on wheels in the world, made in the foundry of Jaigarh.

5. Jal Mahal, Jaipur, Rajasthan

Outside the Jaipur city walls are various other palace buildings. To the south-east on the Agra road is the Sisodia Rani Mahal, built for the wife of Sawai Jai Singh (not seen in the picture). To the north-east, numerous buildings line the road to Amber, of which the most important is the Jal Mahal, a pleasure palace built in the middle of Man Sagar, the artificial lake.

6. Hawa Mahal, Jaipur, Rajasthan

Hawa Mahal or Palace of the Winds is one of Jaipur's major landmarks. It was built in 1799 A.D. by Maharaja Sawai Pratap Singh. This five storey building is a unique example of Rajput architecture with its pink coloured semi octagonal and delicate honeycombed sandstone windows. The first two storeys of the Hawa Mahal enclose basement and courtyards, but the three storeys above consist only of passages and balconies. The exterior of the Hawa Mahal gives the look of a *Shikhara* of a temple. It was originally built to enable the royal ladies, seated in its 953 niches and windows to look down on processions in the main street below without being seen by the common people. In the inset picture you can see the back view of the Hawa Mahal.

7. Mehrangarh Fort, Jodhpur, Rajasthan

Jodhpur is situated at a height of 235 m on a range of sandstone hills about 386 kms away from Jaipur. It was founded by Rao Jodha in 1459 A.D. This Fort, popularly known as Mehrangarh, is 122 m above the plains and is enclosed by a high wall with bastions. Its eastern towers and bastions are the strongest. The Fort is guarded by seven gates of which the fourth gate has been destroyed. The first gate, Fateh Pol is between twin bastions and has a curved barbican, its lintel is supported on corbels. Gopal gate, Bhairon gate and Dodhkangra gates have elegant arches. The sixth gate, Loha Pol has the hand prints of fifteen royal *satis,* wives of the Maharaja. this Loha Pol controls the final turn of the path of the fort round the northern end. The seventh gate, Suraj Pol leads sideways from the eastern passage into the durbar court. The Fort contains Moti Mahal, Phool Mahal, the royal ladies apartments (*zenana*), Salim Kot, Murli Manoharji temple, Kalka temple, Chamunda temple, Chamunda-ki-Nandi and the two small tanks namely the Rani Talao and the Gulab Sagar to the south. The Fort summit is divided into three areas, the palace of the north-west, the strongly fortified area to the south edge of the cliff and a long wide terrace to the east of the palace.

In front of the Mehrangarh Fort in the picture you can see the Jaswant Thada.

8. Facade, Zenana Mahal, Mehrangarh Fort, Jodhpur, Rajasthan

The Garh palace of Mehrangarh Fort, of which about two third is a *zenana,* was constructed during 1670 A.D. by Maharaja Jaswant Singh. A major court of the *zenana* is Moti Mahal chowk otherwise known as Moti Vilas. This *zenana* contains numerous *jharokhas* (small, projecting balcony) decorated with *jali* work screens and capped by curved roofs. The whole structure is carved from sandstone and painted white. The profusion of *jalis* creates an illusion of delicate lace work. The narrow gallery between the arcade and the bracket of the stone supporting the facade - a narrow strip along the edge of each room - is a unique feature peculiar to the Jodhpur *zenana.*

9. Jaswant Thada, Jodhpur, Rajasthan

Jaswant Thada, a cluster of royal cenotaphs of royal *chhatries* was built in 1899 A.D. in the memory of Maharaja Jaswant Singh II. The cenotaphs of the Jaswant Thada also has portraits of the rulers of Jodhpur. Royal *chhatries* were built to commemorate the place where royalty had been cremated and also served as a memorial to them.

10. City Palace, Udaipur, Rajasthan

Udaipur, the beautiful city of lakes is situated about 259 kms from Jodhpur and was founded by Maharana Udai Singh. The City Palace of the Maharanas, which stands along the banks of the Pichola lake, is an impressive complex of buildings in granite and marble flanked by octagonal corner towers surmounted by cupolas. The exterior is plastered in white colour. The palace faces the east. The entrance is through the Badi Pol, which contains the royal drums. The Suraj Pol is in line with Toran Pol, the main gate of the palace building. The Toran Pol, which one could enter mounted on horseback leads into a large *chowk,* flanked by two smaller palaces. The Sheesh Mahal is decorated with inlay mirror work and the Krishna Vilas with episodes from stories painted in the miniature style. Blue and white Chinese and Dutch tiles are used in Chini-Ki-Chitra Mahal which is the central pavilion of the palace. The Manak Mahal has glass and porcelain and the Moti Mahal is famous for its mirror work. The scenes from the Radha-Krishna stories are painted on the walls of the Bhim Vilas, and the intricately crafted peacocks in fine mosaic relief on the walls of Mor chowk of Pritam Vilas. The Zenana Mahal, gardens and fountains of Bada Mahal are beautifully constructed.

The Udaipur City Palace is a blend of Mughal decorative art and Rajput military architecture.

11. Lake Palace, Udaipur, Rajasthan

Lake Pichola was formed in the fourteenth century A.D. Fringed with green hills and studded with ghats and gardens, the lake provides an ethereal beauty to Udaipur.

Lake palace also known as Jag Niwas is built from white marble and was the summer palace of the former royal family. Its balconies and windows overlook the lake. This airy complex has marble floors and granite columns. The gardens and fountains are well laid and the rooms are beautifully decorated. The Sajjan Niwas or Lotus suite of the palace contains murals which depict girls dancing among lotus leaves. In the courtyard there is a lily pond. Jag Niwas has now been converted to a hotel and is called the Lake Palace Hotel.

12. Jag Mandir, Udaipur, Rajasthan

The Jag Mandir, which is on the southern island of the Pichola lake was built in 1551 A.D. The domed pavilion or Gul Mahal, which is its greatest landmark, was commenced by Karan Singh. It is one of the few examples of Mughal style of architecture in the state. It is said, that in 1623 A.D. Prince Khurram the future Emperor Shahjahan, lived here when he revolted against his father, Jahangir.

13. Kumbhalgarh Fort, Kumbhalgarh, Rajasthan

Kumbhalgarh is a spectacular hill fort built by Maharana Kumbha, at a height of 1087 m above sea level and is about 90 kms from Udaipur. It lies on the top most ridge of the hill, surrounded by thirteen other peaks. The Chittorgarh Fort and the Kumbhalgarh Fort are the two most important forts of Mewar.

The Kumbhalgarh Fort has four wide walls, and it was well equipped with batteries, and sufficient accommodation for the troops and the public. It took fifteen years to complete the fort.

The approach is impressive across deep ravines and through thick jungles. Seven massive gates guard the approaches, while seven ramparts, one within the other reinforced by rounded bastions and huge watchtowers, render the fort impregnable. Besides many gates, it has several temples like Kumbashyam, Nikhanth and Kuber within the fort.

The outer wall embraces an area of several square miles. The tiers of inner ramparts rise to the summit, which are crowned by the Badal Mahal of the Ranas. The palace has several sets of rooms furnished in pastel colours in the nineteenth century A.D.

14. Ramparts, Kumbhalgarh Fort, Kumbhalgarh, Rajasthan

The outer wall of the Kumbhalgarh Fort embraces an area of several square miles. This wall is comparable to the grandeur of the Great Wall of China.

15. Alwar Palace, Alwar, Rajasthan

The building of the Alwar City Palace was commenced in 1793 A.D. by Raja Bakhtawar Singh. It consists of a varied group of buildings of different styles of architecture. In front of the palace there is a large ornamental tank. The interior of the palace is notable for the Sheesh Mahal which is dotted with Rajput miniature paintings sealed under glass. Near the Sheesh Mahal is the armoury and the royal library, which contains a fine collection of oriental manuscripts including a copy of a beautifully illustrated Gulistan manuscript of 1848 A.D. It also has a rich collection of bejewelled sabres, swords and weapons.

The Palace is a delicate rendering of the style which emerged out of the blend of Rajput and Mughal style of architecture.

16. Victory Tower, Chittorgarh Fort, Chittorgarh, Rajasthan

Victory Tower or Jaya Stambh is a masterpiece of fifteenth century revivalist Jain architecture, built by Rana Kumbha, one of the most powerful Kings of Mewar. It was designed by an architect called Jaita to commemorate the victory over Mahmud Khalji of Malwa in 1440 A.D. The tower was mainly built by compact limestone and the quartz rock on which it stands. It has nine storeys rising to 37.2 m above the ground level. In each tier of this tower, there is a *mandapa* associated with a temple, enriched with balconied windows and is carved profusely with the gods of the Hindu pantheon. The ninth storey has a vault with a sculptured representation of Lord Krishna surrounded by dancing *gopis.*

17. Deeg Palace, Deeg, Rajasthan

Deeg was the capital of the Jat Kingdom founded by Badan Singh. It is situated about 32 kms from Bharatpur. The fortress and the pleasure palaces of Deeg are of major architectural importance of that period.

Badan Singh's palace at Deeg, also known as Purana Mahal, is a single continuous mass of building built on a plain with little fortification. Inside the palace there are apartments, now used for Government offices, with two open *chowks,* however the building is a rectangular block. It's upper portion consists of a number of domes and galleries. The main entrance of the palace is via the Singh Pol. This gate has a huge archway ornately carved with lions. some other architectural features of the palace are the Suraj Gate, the Nanga Gate and the two water tanks the Gopal Sagar and the Rup Sagar. In the picture the reflection of the palace can be seen in the Gopal Sagar.

18. Bundi Fort, Bundi, Rajasthan

Bundi is situated in south-east Rajasthan. Bundi Fort was constructed by Rao Deva Hara in 1342 A.D. This fort is popularly known as Taragarh Fort. It is square in plan with large corner bastions. In the middle of the west wall there is a fine gateway and in the middle of the east wall, a postern. The ramparts are crenellated, with high parapets. The main gate, to the west is flanked by octagonal towers protected by a strong barbican. The main entrance has vaulted guard rooms. the fort is dominated by a huge masonry tower, the Bhim Burj, which was used to house one of the most famous cannons of this region, the sixteenth century Garbh-Ganjam (now lost). The Rani Mahal at Taragarh, stands reflected in a large tank, with delicate fading miniatures on walls and coloured glasses in windows. Bundi Fort contains many water tanks, one among them is the Sabirna-Dha-Ka-Kund. It is a deep, square stepped water tank, built in 1654 A.D. It is a fine example of three dimensional geometrical architecture.

19. Junagarh Fort, Bikaner, Rajasthan

Bikaner was founded by Bika, son of Rao Jodha in 1488 A.D. The approach to the city of Bikaner is magnificent and it is situated on a raised ground. It is encircled by a 5.6 km. long crenellated stone wall. There are five gates and three underground passages, the walls varying in height between 4.6 and 9.2 m.

Junagarh Fort was built by Raja Raj Singh, between 1588 and 1593 A.D. This fort is situated in front of the public park. Its outer walls are approx. 990 m in circumference. The fort is known for its range of thirty-seven palaces and pavilions built by chieftains and kings.

Junagarh Fort's main entrance is through the Suraj Pol. In front of this gateway, sculptures of two great warriors, Jaimal and Patta are mounted on painted stone elephants. Karan Mahal (Diwan-i-Am) built by Raja Karan Singh, is on the opposite side of the *chowk.* The ceiling is supported by a continuous arcade of cusped arches over balustrade and fluted columns. Above the Karan Mahal is Gaj Mandir, a suite of royal apartments on the roof of which is Chatra Niwas, a small pavilion. Karan Mahal leads to Dungar Niwas which has painted walls and a white marble tank. This was filled with coloured water during the festival of Holi. The oldest apartment of the fort is Lal Niwas. The walls are richly painted with stylized symmetrical, floral motifs. The balconies overlooking the *chowk*, to the south, are fitted with *jalis.*

The walls of Chandra Mahal built together with the Phool Mahal and Gaj Mandir by Gaj Singh are beautifully painted. The Phool Mahal is decorated with motifs of flowers and delicately inlaid mirror work. Anup Mahal contains the coronation hall better known as the Raj Tilak Hall, which is decorated with red sandstone and glass inlay work. The lovely Ganga Niws (audience hall) was added in the nineteenth century A.D.

20. Anup Mahal, Junagarh Fort, Bikaner, Rajasthan

Anup Mahal was built between 1669 and 1698 A.D. and was decorated later by Maharaja Gaj Singh. It is an exquisite building with a stunning coronation hall in red and gold. The Raj Tilak Hall, as it is known, is enriched with ornamental lacquer work and opaque glass inlay work. One anti-chamber is vivid acquamarine blue inlaid with gilt. Another room contains the famous *hindola* or swing, a rare specimen.

The Anup Mahal is the epitome of the splendour and decorative art of Rajput architecture and is the fabulous treasure-house of a desert prince.

21. Kota Palace, Kota, Rajasthan

Kota was founded in 1579 A.D., and is 39 kms. from Bundi. It lies on the east bank of the Chambal river. The Kota palace was built around 1625 A.D. by Madho Singh, son of Rao Ratan Singh of Bundi.

There is a large Durbar Hall, the Bhim Mahal constructed in the early eighteenth century A.D., which is covered with Rajput miniatures depicting the history and legends of Kota. It has some fine ivory and ebony inlay work and a profusion of surface ornamentation. The Elephant Gate is flanked by murals showing a royal wedding procession and bracketed elephants, whose trunks are raised in a gesture of salutation over the central arch. The exterior of the palace is a mixture of robust fortification and delicate ornamental stone work. The Akhade ka Mahal was added to the west of the inner court between 1723 and 1756 A.D. and was later enlarged and reconstructed between 1888 and 1940 A.D. The prominent Hawa Mahal, added next to the entrance to the fort in 1864 A.D. is a copy of the famous facade at Jaipur.

22. Jaisalmer Fort, Jaisalmer, Rajasthan

Jaisalmer was founded by Bhatti Chief Rawal Jaisal in 1156 A.D. It is situated in the Thar desert, about 287 kms from Jodhpur. The fort stands on Trikuta hill, 76 m high and is enclosed by an imposing crenellated sandstone wall 9.1 m high. It is reinforced with ninety-nine bastions which were used as gun platforms. Wells within the fort provided a regular source of water. The Garh palace stands at the highest point within the fort bordering two sides of an open square known as the *chauhata.* This is also called the Juna Mahal. All the windows have *jali* screens made of stone, typical of all Rajasthan buildings of the period. Between 1577 and 1623 A.D. the Suraj Pol, Ganesh Pol and Hawa Pol were erected. The Suraj Pol is decorated with a large rounded ornate Sun. To its right is a large tower crowned by a kiosk with delicate carved balconies called Tazia Tower, which has five storeys of ornately carved details with drooping Bengali style roofs. Beyond a spiked entrance gate, on a sharp turn in the path is the Ganesh Pol, which leads to Rang Pol. The outer defences are reinforced by a second rampart, which runs parallel to and higher than the first. Rang Mahal, situated above Hawa Pol, is decorated with murals. Sarvotam Vilas, a most distinguished building is decorated with blue tiles and glass mosaics. Adjacent is the Gaj Vilas, built in 1884 A.D. It stands on a high plinth, its eastern elevation facing the Square or *chauhata.*

Also within the four walls is an interesting group of Jain temples, dating from the twelfth to fifteenth century A.D. The oldest is the Parshawanath temple. They are all impressive and add another dimension to the secular buildings of the city.

23. Salim Singh Ki Haveli, Jaisalmer, Rajasthan

Salim Singh Ki Haveli was built in 1815 A.D. It was built on an earlier structure which was constructed in the late seventeenth century A.D. The Haveli has a beautiful arched roof and exquisitely carved details with brackets in the form of peacocks. The entrance is guarded by a large stone elephant, (not seen in the picture). The upper portion of the house has been compared to a ship's prow and, is often called Jahaz Mahal. The top two storeys, the Kanchan Mahal and Ranga Mahal were once adorned with glass mosaics and bright colours which no longer exist.

This Haveli belonged to the influential Mohta family and is still used for residential purposes.

24. Nathumal's Haveli, Jaisalmer, Rajasthan

Nathumal's Haveli was built for the Diwan Maharawal Bari Sal in 1885 A.D.

The entrance is flanked by stone elephants and the entire facade is carved with a riot of ornamental details – soldiers, horses, elephants, flowers and birds. The building was designed and built by two craftsmen-architects Hathi and Lulu. One carved on the left side, the other the right, but the overall impact is one of complete harmony. Extraordinarily, the house is built of rock and not dressed stone. In the main room at the first-floor level, the entire front wall is a huge, single rock carved into a bay. The inner walls are painted with beautiful miniatures.